इस्मत-ए-अम्बिया

(नबियों की सच्चरित्रता)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

इस्मत-ए-अंबिया

(नबियों की सच्चरित्रता)

मुक्ति किस प्रकार मिल सकती है
और
उसकी वास्तविक फ़िलास्फ़ी क्या है?

लेखक
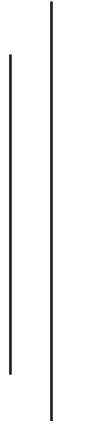
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: इस्मत-ए-अंबिया
Name of book	: Ismat–E–Ambiya
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Masih Mouood Alaihissalam
अनुवादक	: डॉ अन्सार अहमद, पी एच. डी., आनर्स इन अरबिक
Translator	: Dr Ansar Ahmad, Ph. D, Hons in Arabic
टाईपिंग, सैटिंग	: नादिया परवेज़ा
Typing Setting	: Nadiya Perveza
संस्करण तथा वर्ष	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) मई 2018 ई०
Edition. Year	: 1st Edition (Hindi) May 2018
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

मुक्ति किस प्रकार प्राप्त हो सकती है और उसकी वास्तविक फ़िलास्फ़ी क्या है?

धार्मिक समस्याओं में से मुक्ति और सिफ़ारिश की समस्या एक ऐसी महान एवं आधारभूत समस्या है कि धार्मिक पाबन्दी के समस्त उद्देश्य इसी पर जाकर समाप्त होते हैं तथा किसी धर्म की सच्चाई के परखने के लिए वही एक ऐसा साफ और स्पष्ट निशान है जिसके द्वारा पूर्ण सन्तुष्टि एवं सन्तोष-पूर्वक ज्ञात हो सकता है कि अमुक धर्म वास्तव में सच्चा और ख़ुदा की ओर से है। और यह बात बिल्कुल सच और सही है कि जिस धर्म ने इस समस्या को सही तौर पर वर्णन नहीं किया या अपने समुदाय में मुक्ति प्राप्त लोगों के वर्तमान नमूने स्पष्ट अन्तर के साथ दिखा नहीं सका उस धर्म के मिथ्या होने के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं। परन्तु जिस धर्म ने सही तौर पर मुक्ति की मूल वास्तविकता दिखाई है और न केवल इतनी बल्कि अपने वर्तमान समय में ऐसे मनुष्य भी प्रस्तुत किए हैं जिन में पूर्ण रूप से मुक्ति की रूह फूंकी गई है उसने मुहर लगा दी है कि वह सच्चा और ख़ुदा की ओर से है।

यह तो स्पष्ट है कि प्रत्येक मनुष्य स्वाभाविक तौर पर अपने दिल में महसूस करता है कि वह सैकड़ों प्रकार की लापरवाहियों, पर्दों, कामवासनाओं के आक्रमणों, ग़लतियों, कमज़ोरियों, मूर्खताओं,

क़दम-क़दम पर अंधकारों, ठोकरों, निरन्तर ख़तरों तथा भ्रमों के कारण एवं संसार की नाना प्रकार की विपत्तियों, आपदाओं के कारण एक ऐसे शक्तिशाली हाथ का अवश्य मुहताज है जो उसे इन समस्त अप्रिय बातों से बचाए क्योंकि मनुष्य अपने स्वभाव में कमज़ोर है और वह कभी एक पल के लिए भी अपने ऊपर भरोसा नहीं कर सकता कि वह स्वयं कामवासनाओं के अंधकारों से बाहर आ सकता है। यह तो मानवीय अन्तरात्मा की गवाही है और इसके अतिरिक्त यदि सोच-विचार से काम लिया जाए तो सद्‌बुद्धि इसी को चाहती है कि मुक्ति के लिए सिफ़ारिश कर्ता की आवश्यकता है। क्योंकि ख़ुदा तआला अत्यन्त पवित्रता एवं शुद्धता की श्रेणी पर है और मनुष्य अत्यन्त अंधकार, गुनाह तथा गन्दगी के गढ़े में है और अनुकूलता एवं समानता के अभाव के कारण मानवीय गिरोह का सामान्य वर्ग इस योग्य नहीं कि वह सीधे तौर पर ख़ुदा तआला से वरदान पाकर मुक्ति की श्रेणी प्राप्त कर ले। इसलिए ख़ुदा की हिकमत और रहमत (दया) ने यह चाहा कि मानव जाति और उसमें कुछ कामिल लोग जो अपने स्वभाव में एक विशेष श्रेष्ठता रखते हों एक दरमियानी माध्यम हों और वे इस प्रकार के इन्सान हों जिन के स्वभाव ने कुछ भाग लाहूती (ख़ुदा में लीन होने की) विशेषताओं से लिया हो और कुछ भाग नासूती (सांसारिक विशेषताओं) ताक़ि ख़ुदा में लीन होने की अनुकूलता के कारण ख़ुदा से वरदान प्राप्त करें तथा शरीअत की समानता के कारण उस वरदान को जो ऊपर से लिया है नीचे को अर्थात् मानव जाति को पहुंचाए। और यह कहना वास्तव में सही है कि

इस प्रकार के इन्सान ख़ुदा में लीन होने औऱ शरीअत की ख़ूबी में अधिकता के कारण अन्य इन्सानों से एक विशेष अन्तर रखते हैं। जैसे यह एक मख़्लूक (सृष्टि) ही अलग है। क्योंकि इन लोगों को ख़ुदा के प्रताप और श्रेष्ठता प्रकट करने के लिए जितना जोश दिया जाता है और इन के दिलों में वफ़ादारी का जितना माद्दः (तत्त्व) भरा जाता है तथा इनको मानव जाति की हमदर्दी का जितना जोश प्रदान किया जाता है वह एक ऐसी विलक्षण बात है कि दूसरे के लिए उसकी कल्पना करना भी कठिन है। हां यह भी स्मरण रखने योग्य है कि ये समस्त लोग एक श्रेणी पर नहीं होते बल्कि इन स्वाभाविक ख़ूबियों में कोई उच्च श्रेणी पर है, कोई उस से कम तथा कोई उस से कम। एक सद्बुद्धि रखने वाले व्यक्ति की अन्तर्आत्मा समझ सकती है कि सिफ़ारिश की समस्या नहीं है, बल्कि ख़ुदा की निर्धारित व्यवस्था में प्रांरभ से इसके उदाहरण मौजूद हैं और प्रकृति के नियम में इसकी गवाहियां स्पष्ट तौर पर मिलती हैं।

अब सिफ़ारिश की फ़िलास्फ़ी इस प्रकार समझनी चाहिए कि شفع शब्दकोश में (जोड़ने) को कहते हैं तो शफ़ाअत के शब्द में इस बात की ओर संकेत है कि वह आवश्यक बात जो शफ़ीअ (सिफ़ारिश कर्ता) की विशेषताओं में से होती है यह है कि उसे दो तरफ़ा (दोनों ओर से) एकता प्राप्त हो। अर्थात् एक ओर उसके नफ़्स का ख़ुदा तआला से ऐसा संबंध हो कि जैसे वह पूर्ण एकता के कारण ख़ुदा तआला के लिए बतौर जोड़ने और बतौर पैबन्द के हो और दूसरी ओर उसका मख़्लूक़ से भी गहरा संबंध हो जैसे

वह उनके अंगों का एक भाग हो। तो शफ़ाअत (सिफ़ारिश) का प्रभाव सम्पादित होने के लिए वास्तव में यही दो भाग हैं जिन पर प्रभाव का सम्पादन निर्भर है। यही राज़ है जो ख़ुदा की हिक्मत ने आदम को ऐसे ढंग से बनाया कि स्वभाव के प्रारंभ से ही उसकी प्रकृति में दो प्रकार के संबंध स्थापित कर दिए। अर्थात् एक संबंध तो ख़ुदा से स्थापित किया जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाया –

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِىْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ

(अलहिज्र – 30)

अर्थात् जब मैं आदम को ठीक-ठीक बना लूं और अपनी रूह उसमें फूंक दूं तो हे फ़रिश्तो तुम उसी समय सज्दे में गिर जाओ।★ इस उपरोक्त आयत से स्पष्ट तौर पर सिद्ध है कि ख़ुदा ने आदम में उसके जन्म के साथ ही अपनी रूह फूंक कर उसकी प्रकृति को अपने साथ एक संबंध स्थापित कर दिया। यह इसलिए किया गया ताकि इन्सान को स्वाभाविक तौर पर ख़ुदा से संबंध पैदा हो जाए। ऐसा ही दूसरी ओर यह भी आवश्यक था कि उन लोगों से भी

★हाशिया :- इस आयत में एक गहरे राज़ की ओर संकेत है जो चरम श्रेणी की खूबी का एक निशान है, और वह यह कि इन्सान प्रांरभ में केवल इन्सान की आकृति होती है परन्तु अन्दर से वह निर्जीव (बेजान) होता है और उसमें कोई रूहानियत नहीं होती और इस स्थिति में फ़रिश्ते उसकी सेवा नहीं करते, क्योंकि वह एक मस्तिष्क विहीन पोस्त है। परन्तु इसके बाद धीरे-धीरे नेक इन्सान पर यह समय आ जाता है कि वह ख़ुदा से बहुत ही क़रीब जा रहता है। तब जब ठीक-ठीक प्रतापी ख़ुदा के प्रकाश के सामने उसका नफ़्स जा पड़ता है तथा बीच में कोई पर्दा नहीं होता कि उस प्रकाश को रोक दे तो अविलम्ब ख़ुदाई प्रकाश जिसे दूसरे शब्दों में ख़ुदा की रूह कह

स्वाभाविक संबंध हो जो मानव जाति कहलाएंगे। क्योंकि जब उनका अस्तित्त्व आदम की हड्डी में से हड्डी और मांस में से मांस होगा तो वह अवश्य उस रूह में से भी भाग लेंगे जो आदम में फूंकी गई। इसलिए आदम स्वाभाविक तौर पर उनका शफीअ (सिफ़ारिश कर्ता) ठहरेगा। क्योंकि रूह फूंके जाने के कारण जो ईमानदारी आदम की प्रकृति (फ़ितरत) को दी गई है अवश्य है कि उस की ईमानदारी का कुछ भाग उस व्यक्ति को भी मिले जो उसमें से निकला है। जैसा कि स्पष्ट है कि प्रत्येक जानवर का बच्चा उसकी विशेषताओं तथा कार्यों में से भाग लेता है और वास्तव में शफ़ाअत (सिफ़ारिश की वास्तविकता भी यही है कि स्वाभाविक वारिस अपने विरसा देने वाले से भाग ले। क्योंकि अभी हम वर्णन कर चुके हैं कि शफ़ाअत का शब्द شفع के शब्द से निकला है जो जोड़े को कहते हैं। तो जो व्यक्ति स्वाभाविक तौर पर एक दूसरे व्यक्ति का जोड़ा ठहर जाएगा, उसकी विशेषताओं में से अवश्य भाग लेगा। इसी सिद्धान्त पर पैदायश की विरासत का सम्पूर्ण सिलसला जारी है। अर्थात् मनुष्य का बच्चा

शेष हाशिया - सकते हैं उस इन्सान के अन्दर दाख़िल हो जाती है। वही एक विशेष हालत है जिस के संबंध में ख़ुदा के कलाम में कहा गया कि ख़ुदा ने आदम में अपनी रूह फूंक दी। इस हालत पर न किसी बनावट से और न ऐसी बात से जो शरीअत के आदेशों के रंग में होती है फ़रिश्तों को यह आदेश होता है कि उसके आगे सज्दे में गिरें। अर्थात पूर्णरूप से उसकी आज्ञा का पालन करें जैसे कि वे उसे सज्दा कर रहे हैं। यह आदेश फ़रिश्तों की प्रकृति के साथ सलंग्न होता है कोई नई बात नहीं होती। अर्थात ऐसे व्यक्ति के मुक़ाबले पर जिस का अस्तित्त्व ख़ुदा के रूप पर आ जाता है फ़रिश्ते स्वयं स्वाभाविक तौर पर महसूस कर लेते हैं कि अब उसकी सेवा के लिए हमें गिरना चाहिए। ऐसे क़िस्से वास्तव

मनुष्य की शक्तियों में से हिस्सा लेता है और घोड़े का बच्चा घोड़े की शक्तियों में से हिस्सा लेता है और बकरी का बच्चा बकरी की शक्तियों में से हिस्सा लेता है। इसी विरासत का नाम दूसरे शब्दों में शफ़ाअत से लाभान्वित होना है। क्योंकि जब शफ़ाअत का असल شُــفع अर्थात् जोड़ा है तो शफ़ाअत से लाभान्वित होना चाहता है उसे उससे स्वाभाविक संबंध प्राप्त हो, ताकि जो कुछ उसकी प्रकृति को दिया गया है उसकी प्रकृति को भी वही मिले। यह संबंध जैसा कि वहबी (प्रदत्त) तौर पर मानव-प्रकृति में मौजूद है कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का एक भाग है ऐसा ही कसबी (अर्जित) तौर पर भी

शेष हाशिया - में किस्से नहीं हैं बल्कि पवित्र क़ुर्आन में ख़ुदा की आदत इसी प्रकार से है कि उन किस्सों के नीचे कोई ज्ञान संबंधी वास्तविकता होती है। तो यहां यही ज्ञान संबंधी वास्तविकता है कि ख़ुदा तआला ने इसे क़िस्से की शैली में व्यक्त करना चाहा है कि कामिल (पूर्ण) इन्सान की निशानी क्या है?! तो फ़रमाया कि कामिल इन्सान की निशानी यह है कि (1) इन्सानी सृष्टि के किसी हिस्से में वह दुर्भाग्यशाली न हो और उसकी प्रकृति पूर्ण संतुलन पर बनी हो (2) दूसरी निशानी यह है कि ख़ुदा की रूह ने उसके अन्दर प्रवेश किया हो (3) तीसरी निशानी यह है कि फ़रिश्ते उसको सज्दा करें। अर्थात सब फ़रिश्ते जो पृथ्वी और आकाश के कार्य में लगे हुए हैं उसके सेवक हों तथा उसकी इच्छानुसार काम करें। असल बात यह है कि जब ख़ुदा तआला किसी बन्दे के साथ होता है तो उसके सब फ़रिश्तों की सेना भी उस व्यक्ति के साथ हो जाती है और उसकी ओर झुक जाती है। तब प्रत्येक मैदान में तथा प्रत्येक कठिनाई के समय फ़रिश्ते उसकी सहायता करते हैं और उस की आज्ञा का पालन करने के लिए हर दम कमर कसे रहते हैं। जैसे वे हर समय उसके सामने सज्दे में हैं, क्योंकि वह ख़ुदा का ख़लीफ़ा है। परन्तु इन बातों को ज़मीनी विचार के लोग समझ नहीं सकते, क्योंकि उन्हें आकाशीय रूह से हिस्सा नहीं दिया गया। (इसी से)

यह संबंध विकासशील है। अर्थात् जब एक मनुष्य यह चाहता है कि जो स्वाभाविक प्रेम और स्वाभाविक हमदर्दी मानव जाति के लिए उसमें मौजूद है उसमें वृद्धि हो तो उसमें प्रकृति एवं अनुकूलता के दायरे के अनुसार वृद्धि भी हो जाती है। इसी आधार पर प्रेम की शक्ति का जोश मारना (लहरें मारना) भी है कि एक व्यक्ति एक व्यक्ति से इतना प्रेम बढ़ाता है कि उसको देखे बिना आराम नहीं कर सकता तो उसके प्रेम की अधिकता उस दूसरे व्यक्ति के दिल पर भी असर करती है और जो व्यक्ति चरम सीमा तक किसी से प्रेम करता है वही व्यक्ति पूर्ण रूप से तथा सच्चे तौर पर उसकी भलाई को भी चाहता है। अतः यह बात बच्चों के बारे में उनकी माताओं की ओर से देखी गई और महसूस की गई है। तो शफ़ाअत की असल जड़ यही प्रेम है जब उसके साथ स्वाभाविक संबंध भी हो, क्योंकि स्वाभाविक संबंध के बिना प्रेम का कमाल (ख़ूबी) जो शफ़ाअत की शर्त है असंभव है। इस संबंध को मानवीय प्रकृति में दाखिल करने के लिए ख़ुदा ने "हव्वा" को अलग पैदा न किया, बल्कि आदम की पसली से ही उसको निकाला। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाया है –

وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا (अन्निसा-2)

अर्थात् आदम के अस्तित्त्व में से ही हमने उसका जोड़ा पैदा किया जो "हव्वा" है। ताकि आदम का यह संबंध हव्वा और उसकी सन्तान से स्वाभाविक हो न कि बनावटी, और उसकी सन्तान से स्वाभाविक हो न कि बनावटी, और यह इसलिए किया ताकि आदमज़ादों (मनुष्यों) के संबंध तथा हमदर्दी को अनश्वरता हो क्योंकि स्वाभाविक संबंध पृथक होने वाले नहीं होते हैं। परन्तु

अस्वाभाविक संबंधों के लिए अनश्वरता (बक़ा) नहीं है क्योंकि उनमें वह परस्पर आकर्षण नहीं है जो स्वाभाविक में होता है। अतः ख़ुदा ने इस से दोनों प्रकार के संबंध जो आदम के लिए ख़ुदा से और मानव जाति से होने चाहिए थे स्वाभाविक तौर पर पैदा किए। तो इस वक्तव्य से स्पष्ट है कि कामिल इन्सान जो शफीअ होने के योग्य हो वही व्यक्ति हो सकता है जिसने इन दोनों संबंधों से पूर्ण हिस्सा लिया हो तथा कोई व्यक्ति इन हर दो प्रकार की विशेषताओं के बिना कामिल इन्सान नहीं हो सकता। इसी लिए आदम के बाद यही ख़ुदा की सुन्नत (नियम) ऐसे तौर पर जारी हुई कि कामिल इन्सान के लिए जो शफ़ीअ हो सकता है ये दोनों संबंध आवश्यक ठहराए गए। अर्थात् एक यह संबंध कि उनमें आकाशीय रूह फूंकी गई और ख़ुदा ने ऐसा उनसे मिलाप किया कि जैसे उनमें उतर आया। दूसरे यह कि मानव जाति के जुड़ने का वह जोड़ जो हव्वा और आदम में परस्पर प्रेम एवं हमदर्दी के साथ सुदृढ़ किया गया था उनमें सबसे अधिक चमकाया गया। इसी तहरीक से उनको पत्नियों की ओर भी दिलचस्पी हुई, और यही इस बात का प्रथम लक्षण है कि उनमें मानवजाति की हमदर्दी का माद्दः (तत्त्व) है, इसी की ओर वह हदीस संकेत करती है जिसके ये शब्द हैं कि خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِاَهْلِهٖ अर्थात् तुम में से सब से अधिक मानव जाति के साथ भलाई करने वाला वही हो सकता है कि पहले अपनी पत्नी के साथ भलाई करे। परन्तु जो व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ अत्याचार और शरारत का व्यवहार करता है संभव नहीं कि वह दूसरों के साथ भी भलाई कर सके, क्योंकि ख़ुदा ने आदम को पैदा करके सबसे पहले आदम के

प्रेम का चरितार्थ उसकी पत्नी को ही बनाया है। अत: जो व्यक्ति अपनी पत्नी से प्रेम नहीं करता और या उसकी स्वयं की पत्नी ही नहीं वह कामिल इन्सान होने की श्रेणी से गिरा हुआ है, और शफ़ाअत की दो शर्तों में से एक शर्त उसमें खोई हुई है। इसलिए यदि उसमें इस्मत् पाई भी जाए तब भी वह शफ़ाअत करने के योग्य नहीं। किन्तु जो व्यक्ति कोई पत्नी निकाह में लाता है वह अपने लिए मानव-जाति की हमदर्दी की बुनियाद डालता है। क्योंकि एक पत्नी बहुत से रिश्तों का कारण हो जाती है और बच्चे पैदा होते हैं उनकी पत्नियां आती हैं तथा बच्चों की नानियां और बच्चों के मामा इत्यादि होते हैं और इसी प्रकार से ऐसा व्यक्ति अकारण प्रेम और हमदर्दी का अभ्यस्त हो जाता है और उसकी इस आदत का दायरा विस्तृत होकर सब को अपनी हमदर्दी से हिस्सा देता है। परन्तु जो लोग जोगियों की तरह पालन-पोषण पाते हैं उनको इस आदत के विस्तृत करने का कोई अवसर नहीं मिलता। इसलिए उनके दिल

★**हाशिया :-** जबकि बुद्धि और न्याय की दृष्टि से गुनाह की परिभाषा यह है कि गुनाह एक कार्य को उस समय कहा जाए जबकि एक इन्सान उस कार्य के द्वारा ख़ुदा के आदेश को तोड़ कर दण्डनीय ठहरे तो इस स्थिति में आवश्यक हुआ कि गुनाह के होने से पहले ख़ुदा का आदेश मौजूद हो और उस गुनाह करने वाले को वह आदेश पहुंच भी गया हो और उस गुनहगार के बारे में बुद्धि कह सकती हो कि इस कार्य के करने से वास्तव में वह दण्डनीय ठहर चुका है (उदाहरण बतौर अपवाद) ज़ैद एक ऐसे बहुत दूर देश में है कि ख़ुदा की शरीअत उसको नहीं पहुंची तो यदि ज़ैद ने शरीअत के आदेशों में से किसी एक आदेश या कुछ आदेशों को तोड़ दिया है तो इस ख़ुदा के आदेशों के उल्लंघन करने से वह अपराधी नहीं है। क्योंकि शरीअत की उसे सूचना नहीं

कठोर और शुष्क रह जाते हैं।

और इस्मत का शफ़ाअत से कोई वास्तविक संबंध नहीं, क्योंकि इस्मत का अर्थ केवल इस सीमा तक है कि मनुष्य गुनाह से बचे। और गुनाह की परिभाषा यह है कि मनुष्य ख़ुदा के आदेश को जान बूझ कर तोड़ कर दण्ड योग्य ठहरे।★ तो स्पष्ट है कि इस्मत और शफ़ाअत में कोई व्यक्तिगत अनिवार्यता नहीं क्योंकि कथित परिभाषा की दृष्टि से अवयस्क बच्चे और जन्मजात पागल भी मासूम हैं। कारण यह कि वे इस योग्य नहीं हैं कि कोई गुनाह जानबूझ कर करें और न वे ख़ुदा तआला के नज़दीक किसी कार्य करने से दण्डनीय ठहरते हैं। तो निस्सन्देह वे अधिकार रखते हैं कि उन को मासूम (निष्पाप) कहा जाए। परन्तु क्या वे यह अधिकार भी रखते हैं कि मनुष्यों के शफ़ीअ हों और मुक्ति दाता कहलाएं? तो इस से बिल्कुल स्पष्ट है कि मुक्ति दाता होने तथा मासूम होने

शेष हाशिया - परन्तु यदि ज़ैद बुद्धि और विवेक रखने की स्थिति में मूर्ति-पूजा करने लगे और ख़ुदा की तौहीद (एकेश्वरवाद) से विमुख हो जाए तो वह उस तक शरीअत न पहुंचने के बावजूद भी अपराधी है, क्योंकि जिस तौहीद को क़ुर्आन लाया है वह ईसाइयों की तस्लीस की तरह ऐसी बात नहीं है जो मनुष्य की प्रकृति में अंकित न हो, बल्कि वह प्रथम दिवस से मनुष्य की प्रकृति में अंकित है। इसलिए उसका उल्लंघन करने के लिए शरीअत का पहुंचना आवश्यक नहीं, केवल मानवीय बुद्धि का पाया जाना आवश्यक है और यदि शरीअत मौजूद है और एक व्यक्ति को पहुंच गई है परन्तु वह अवयस्क है या पागल है और उस हालत में वह किसी ऐसे कार्य को कर चुका है जो शरीअत की दृष्टि से गुनाह कहलाता है तो वह दण्डनीय नहीं, क्योंकि मानवीय बुद्धि उसे नहीं दी गई। इसलिए वह शरीअत के बावजूद फिर भी मासूम (निष्पाप) है। (इसी से)

में कोई वास्तविक रिश्ता नहीं और बुद्धि हरगिज़ नहीं समझ सकती कि इस्मत का शफ़ाअत से कोई वास्तविक संबंध है। हां बुद्धि इस बात को ख़ूब समझती है कि शफ़ीअ के लिए यह आवश्यक है कि तथाकथित दो प्रकार के संबंध उसमें पाए जाएं और बुद्धि निस्संकोच यह आदेश करती है कि यदि किसी मनुष्य में ये दो विशेषताएं मौजूद हों कि एक ख़ुदा से घनिष्ठ संबंध हो और दूसरी ओर मख़्लूक़ (सृष्टि) से भी प्रेम एवं हमदर्दी का संबंध हो तो निस्सन्देह ऐसा व्यक्ति उन लोगों के लिए जिन्होंने जान बूझ कर उससे संबंध नहीं तोड़ा दिल के जोश के साथ शफ़ाअत करेगा और उस की वह शफ़ाअत स्वीकार की जाएगी। क्योंकि जिस व्यक्ति की प्रकृति को ये दो संबंध प्रदान किए गए हैं उन का अनिवार्य परिणाम यही है कि वह ख़ुदा के पूर्ण प्रेम के कारण इस वरदान को खींचे और फिर स्त्रष्टि के पूर्ण प्रेम के कारण वह वरदान उन तक पहुंचाए और यही वह हालत है जिसे दूसरे शब्दों में शफ़ाअत कहते हैं। शफ़ीअ व्यक्ति के लिए जैसा कि अभी मैंने वर्णन किया है आवश्यक है कि उसका ख़ुदा से एक ऐसा गहरा संबंध हो कि जैसे ख़ुदा उसके दिल में उतरा हुआ हो और उसकी सम्पूर्ण इन्सानियत मर कर बाल-बाल में लाहूती (ख़ुदा में लीन होने की) चमकार पैदा हो गई हो और उसकी रूह पानी की तरह पिघल कर बह निकली हो और इस प्रकार से ख़ुदा के सानिध्य (क़ुर्ब) के अन्तिम बिन्दु पर जा पहुंची हो। इसी प्रकार शफ़ीअ के लिए यह भी आवश्यक है कि जिसके लिए वह शफ़ाअत करना चाहता है उसकी हमदर्दी में उसका दिल हाथ से निकल जाता हो ऐसा कि जैसे शीघ्र ही उस पर मूर्च्छा

अस्व्था छा जाएगी और जैसे तीव्र करुणा से उस के अंग उस से अलग होते जाते हैं तथा उसके हवास (ज्ञानेन्द्रियां) बिखर रहे हैं और उसकी हमदर्दी ने उसको उस स्थान तक पहुंचाया हो कि जो बाप से बढ़कर तथा मां से बढ़कर और प्रत्येक हमदर्द से बढ़कर है। तो जब ये दोनों हालतें उसमें पैदा हो जाएंगी तो वह ऐसा हो जाएगा कि जैसे वह एक ओर से लाहूत के स्थान से जुड़ा है और दूसरी ओर नासूत के स्थान से जुड़ा। तब तराज़ू के दोनों पलड़े उसमें समान होंगे। अर्थात् वह लाहूत का पूर्ण द्योतक होगा और नासूत का पूर्ण द्योतक भी और बतौर बर्ज़ख़ (रोक) दोनों हालतों के बीच होगा इस प्रकार से

लाहूत

शफाअत का स्थान

नासूत

इसी शफ़ाअत के स्थान की ओर पवित्र क़ुर्आन में इशारा करके आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पूर्ण मनुष्य होने की शान में फ़रमाया है –

دَنَا فَتَدَلّٰی ۙ﴿۹﴾ فَکَانَ قَابَ قَوۡسَیۡنِ اَوۡ اَدۡنٰی ﴿ۚ۱۰﴾ (अन्नज्म – 9,10)

अर्थात् यह रसूल ख़ुदा की ओर चढ़ा और जहां तक संभावना है ख़ुदा से निकट हुआ और क़ुर्ब (सानिध्य) की समस्त ख़ूबियों को तय किया और लाहूती स्थान से पूर्ण हिस्सा लिया, फिर नासूत की ओर पूर्ण रूप से लौटा। अर्थात् बन्दगी के अन्तिम बिन्दु तक स्वयं को पहुंचाया और मनुष्य होने की समस्त पवित्र अनिवार्य बातें अर्थात् मानवजाति की हमदर्दी एवं प्रेम से जो नासूती कमाल कहलाता है,

पूरा हिस्सा लिया। इसलिए एक ओर ख़ुदा के प्रेम में कमाल तक पहुंचा तो चूंकि वह पूर्ण रूप से ख़ुदा से क़रीब हुआ और फिर पूर्ण रूप से मानवजाति से क़रीब हुआ। इसलिए दोनों ओर के समान क़ुर्ब (सानिध्य) के कारण ऐसा हो गया जैसा कि दो धनुषों के बीच एक रेखा होती है। इसलिए वह शर्त जो शफ़ाअत के लिए आवश्यक है उसमें पाई गई और ख़ुदा ने अपने कलाम में उसके लिए गवाही दी कि वह अपनी मानवजाति में तथा अपने ख़ुदा में इस प्रकार से मध्य में है, जैसे कि प्रत्यंचा (वतर) दो धनुषों के मध्य होती है।

फिर एक अन्य स्थान में उसके ख़ुदाई क़ुर्ब (सानिध्य) के बारे में यों फ़रमाया –

قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُکِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ

(अलअन्आम – 163)

अर्थात् लोगों को सूचना दे दे कि मेरी यह हालत है कि मैं अपने अस्तित्त्व से बिल्कुल खोया गया हूं। मेरी समस्त इबादतें (उपासनाएं) ख़ुदा के लिए हो गई हैं। यह इस बात की ओर संकेत है कि प्रत्येक मनुष्य जब तक वह कामिल नहीं ख़ुदा के लिए शुद्ध तौर पर इबादत नहीं कर सकता, बल्कि कुछ इबादत उसकी ख़ुदा के लिए होती है और कुछ अपने नफ़्स के लिए। क्योंकि वह अपने नफ़्स की श्रेष्ठता और महानता चाहता है जैसा कि ख़ुदा की श्रेष्ठता और महानता करनी चाहिए और यही इबादत की वास्तविकता है और ऐसा ही एक भाग उसका सृष्टि के लिए होता है क्योंकि जिस श्रेष्ठता और सम्मान, क़ुदरत और अधिकार को ख़ुदा से विशिष्ट करना चाहिए उस श्रेष्ठता और क़ुदरत का

हिस्सा मख़्लूक (सृष्टि) को भी देता है। इसलिए जैसा कि वह ख़ुदा की इबादत करता है नफ़्स और सृष्टि की भी इबादत करता है, बल्कि सामान्य तौर पर समस्त घटिया कारणों को अपनी इबादत से हिस्सा देता है। क्योंकि ख़ुदा के इरादे और तक़्दीर के सामने इन कारणों को भी ख़ुदा के सामर्थ्य में भागीदार समझता है। तो ऐसा मनुष्य ख़ुदा तआला का सच्चा इबादत करने वाला नहीं ठहर सकता जो कभी ख़ुदा की श्रेष्ठता का अपने नफ़्स को भागीदार ठहराता है और कभी सृष्टि और कभी कारणों को, बल्कि सच्चा उपासक (इबादत करने वाला) वह है जो ख़ुदा की समस्त श्रेष्ठताएं, समस्त महानताएं और समस्त अधिकार ख़ुदा को ही देता है न कि किसी और को। जब इस तौहीद की श्रेणी पर मनुष्य की इबादत पहुंत जाए तब वह वास्तविक तौर पर ख़ुदा का इबादत करने वाला कहला सकता है। ऐसा मनुष्य जैसा कि ज़ुबान से कहता है कि ख़ुदा भागीदार रहित एक है ऐसा ही वह अपने कार्य से अर्थात् अपनी इबादत से भी ख़ुदा की तौहीद पर गवाही देता है। इसी पूर्ण श्रेणी की ओर संकेत है जो उपरोक्त आयत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाया गया कि तू लोगों को कह दे कि मेरी समस्त इबादतें ख़ुदा के लिए हैं। अर्थात् नफ़्स को और सृष्टि को तथा कारणों को मेरी इबादत में से कोई हिस्सा नहीं।

फिर इसके बाद फ़रमाया कि मेरी क़ुर्बानी भी विशेष तौर पर ख़ुदा के लिए है और मेरा जीवित रहना भी ख़ुदा के लिए और मेरा मरना भी ख़ुदा के लिए। याद रहे कि नसीक: (نَسِيكه) अरबी

शब्द कोश में क़ुर्बानी को कहते हैं और शब्द نُسُك जो आयत में मौजूद है उसका बहुवचन है और इसके दूसरे मायने इबादत के भी हैं। अतः यहां ऐसा शब्द इस्तेमाल किया गया, जिसके मायने इबादत और क़ुर्बानी दोनों पर बोले जाते हैं। यह इस बात की तरफ संकेत है कि पूर्ण इबादत जिसमें नफ़्स, सृष्टि और कारण भागीदार नहीं हैं वास्तव में एक क़ुर्बानी है और पूर्ण क़ुर्बानी वास्तव में पूर्ण इबादत है। फिर इसके बाद जो फ़रमाया कि मेरा जीना भी ख़ुदा के लिए है और मेरा मरना भी ख़ुदा के लिए। यह अन्तिम वाक्य क़ुर्बानी के शब्द की व्याख्या है ताकि कोई इस भ्रम में न पड़े कि क़ुर्बानी से अभिप्राय बकरे की क़ुर्बानी या गाय की क़ुर्बानी या ऊंट की क़ुर्बानी है और ताकि इस शब्द से कि मेरा जीवित रहना और मेरा मरना विशेष तौर पर ख़ुदा के लिए है स्प्ष्ट तौर पर समझा जाए कि इस क़ुर्बानी से अभिप्राय रूह की क़ुर्बानी है और क़ुर्बानी का शब्द क़ुर्ब से लिया गया है यह इस बात की तरफ संकेत है कि ख़ुदा का क़ुर्ब (सानिध्य) तब प्राप्त होता है जब समस्त कामवासना संबंधी शक्तियों तथा कामवासना संबंधी हरकतों पर मौत आ जाए। अतः यह आयत आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पूर्ण क़ुर्ब (सानिध्य) पर एक बड़ा प्रमाण है। यह आयत बता रही है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा में इतने लीन और खो गए थे कि आप के जीवन की समस्त सांसे तथा आपकी मौत केवल ख़ुदा के लिए हो गई थी और आप के अस्तित्त्व में नफ़्स और सृष्टि तथा कारणों का कुछ हिस्सा शेष नहीं रहा था और आप की रूह ख़ुदा की चौखट पर ऐसी निष्कपटता से गिरी थी कि उसमें

ग़ैर की एक कण भर मिलावट नहीं रही थी। तो इस प्रकार से आप ने उस शर्त के एक भाग को पूरा किया जो शफ़ीअ के लिए एक अनिवार्य शर्त है। उपरोक्त आयत का अन्तिम वाक्य यह है कि मेरा जीवित रहना और मरना उस ख़ुदा के लिए है जो सम्पूर्ण संसार के पोषण में लगा हुआ है। इसमें यह संकेत है कि मेरी क़ुर्बानी भी सम्पूर्ण संसार की भलाई के लिए है। इसी प्रकार शर्त का दूसरा भाग शिफाअत का सृष्टि की हमदर्दी है और हम अभी लिख चुके हैं कि आयत دَنٰی فَتَدَلّٰی का दूसरा शब्द अर्थात् تَدَلّٰی इसी सहानुभूति पर आधारित है याद रहे कि تَدَلّٰی का एक वचन دَلْو है और دلو कहते हैं डोल को कुएं के अन्दर डुबोना ताकि उसमें पानी भर जाए और دَلو के दूसरे मायने यह हैं कि किसी को अपना शफ़ीअ पकड़ना। तो تَدَلّٰی के ये मायने हैं कि शफ़ाअत के लिए दूर पड़े लोगों की ओर पूरी हमदर्दी और सहानुभूति से ध्यान देना और उनसे बहुत निकट होकर उनका गन्दा पानी उठाना और उन्हें शुद्ध पानी प्रदान करना।

चूंकि ख़ुदा से प्रेम करना और उसके प्रेम में क़ुर्ब (सानिध्य) के उच्च मुक़ाम तक पहुंचना एक ऐसी बात है कि किसी ग़ैर को उस पर सूचना नहीं हो सकती। इसलिए ख़ुदा तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऐसे कार्य प्रकट किए जिन से सिद्ध होता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वास्तव में समस्त चीज़ों पर ख़ुदा को अपना लिया था और आप के कण-कण और रग-व-रेशे में ख़ुदा का प्रेम और ख़ुदा की श्रेष्ठता ऐसे रची हुई थी कि जैसे आप का अस्तित्त्व ख़ुदा की चमकारों को देखने के लिए एक दर्पण

के समान था। ख़ुदा के पूर्ण प्रेम के लक्षण जितने बुद्धि सोच सकती है वे सब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में मौजूद थे। यह स्पष्ट है कि एक व्यक्ति जो किसी दूसरे व्यक्ति से प्रेम करता है वह या तो उसके किसी उपकार के कारण उस से प्रेम करता है और या उसकी सुन्दरता के कारण। क्योंकि जब से कि मनुष्य पैदा हुआ है उस समय से आज तक समस्त लोगों का सर्वसम्मत यह अनुभव है कि उपकार प्रेम को प्रेरित करता है और इसके बावजूद कि बनी आदम (लोग) अपनी तबियतों में बहुत सा मतभेद रखते हैं तथापि समस्त मनुष्यों के अन्दर यह विशेषता पाई जाती है कि वे उपकार से अपनी योग्यतानुसार प्रभावित होकर उपकारी का प्रेम दिल में पैदा कर लेते हैं यहां तक कि अत्यधिक कंजूस और निर्दयी तथा मनुष्यों का कमीना समुदाय जो चोर और डाकू तथा अन्य अपराधी पेशा लोग हैं जो भिन्न-भिन्न प्रकार के अपराधों के माध्यम से जीविका पैदा करते हैं वे भी उपकार से प्रभावित हो जाते हैं। उदाहरणतया एक चोर जिसका काम सेंध मारना है यदि उसे रात के समय दो घरों में सेंध मारने का अवसर मिले और उन दोनों में से एक व्यक्ति ऐसा हो कि कभी उसने उसके साथ नेकी की थी और दूसरा व्यक्ति अजनबी हो तो उस चोर की प्रकृति बहुत अपवित्र होने के बावजूद इस बात को हरगिज़ पसन्द नहीं करेगी कि सेंध लगाते समय अजनबी के घर को तो जानबूझ कर छोड़ दे और उस अपने दोस्त के घर में सेंध लगाए। बल्कि इन्सान तो इन्सान जानवरों तथा दरिन्दों में भी यह विशेषता पाई जाती है कि वे उपकार करने वाले पर आक्रमण नहीं करते। अत: इस बारे में कुत्ते का चरित्र और आदत अधिकतर लोगों के अनुभव

में आ चुकी है कि वह अपने उपकारी का कितना आज्ञापालन करता है। तो इसमें कुछ सन्देह नहीं कि उपकार प्रेम का कारण है, इसी प्रकार सुन्दरता का कारण प्रेम होना भी प्रकट है। क्योंकि सुन्दरता के देखने में एक आनन्द है और मनुष्य ऐसी चीज़ की ओर स्वाभाविक तौर पर झुकता है जिस से उसे आनन्द पैदा होता है और सुन्दरता से अभिप्राय केवल शारीरिक नक़्श नहीं हैं कि आंख ऐसी हो, नाक ऐसी हो, मस्तक ऐसा हो और रंग ऐसा हो बल्कि इस से अभिप्राय एक व्यक्तिगत ख़ूबी और व्यक्तिगत कमाल तथा व्यक्तिगत उत्तमता है जो कमाल संतुलन और अद्वितीयता से ऐसी श्रेणी पर हो कि उसमें एक आकर्षण पैदा हो जाए। अतएव समस्त वे ख़ूबियां जिन को इन्सान की प्रकृति परिभाषा में शामिल करती है सुन्दरता में शामिल हैं और इन्सान का दिल उनकी ओर खिंचा जाता है। उदाहरणतया एक व्यक्ति एक ऐसा बहादुर पहलवान जो अपनी कला में प्रसिद्ध है कि कोई आदमी कुश्ती में उसकी बराबरी नहीं कर सकता और न केवल इतना ही बल्कि वह शेरों को भी हाथ से पकड़ लेता है और युद्ध के मैदान में अपनी बहादुरी और शक्ति से हज़ार लोगों को भी पराजित कर सकता है तथा हज़ारों शत्रुओं के घेरे में आकर जान बचा कर निकल जाता है तो ऐसा व्यक्ति स्वाभाविक तौर पर दिलों को अपनी ओर आकर्षित करेगा और लोग उससे अवश्य प्रेम करेंगे और यद्यपि लोगों को उसकी इस अद्वितीय पहलवानी एवं बहादुरी से कुछ भी लाभ न हो बल्कि वह किसी बहुत दूर देश का निवासी हो जिसे देखा भी न हो या इस युग से पहले वह गुज़र चुका हो परन्तु फिर भी लोग उसके क़िस्सों को प्रेमपूर्वक सुनेंगे और उसकी इन ख़ूबियों के

कारण उस से प्रेम करेंगे। तो इस प्रेम का क्या कारण है? क्या उसने किसी पर उपकार किया है। स्पष्ट है कि उपकार तो उसने किसी पर नहीं किया, तो सुन्दरता के अतिरिक्त उसका कोई अन्य कारण नहीं। अतः कुछ सन्देह नहीं कि ये समस्त रूहानी खूबियाँ सुन्दरता हैं और उसनका नाम सदाचार और सद्गुण है जो अंगों की सुन्दरता के मुकाबले पर है। और उपकार में और सदाचार तथा सद्गुणों में यह अन्तर है कि किसी व्यक्ति के सदाचार या सद्गुण को उस समय तथा उस व्यक्ति के बारे में उपकार के नाम से नामित किया जाएगा जब एक व्यक्ति उस सदाचार और सद्गुण के प्रभाव से लाभान्वित हो जाए और उस से कोई लाभ प्राप्त कर ले। तो वह व्यक्ति जो उस सदाचार और सद्गुण से लाभ प्राप्त करेगा तो उसके बारे में वह सदाचार और सद्गुण उपकार होगा जिसका वर्णन वह बतौर प्रशंसा और बतौर आभार के करेगा परन्तु दूसरे लोगों के बारे में उसका वह सदाचार सुन्दरता में सम्मिलित होगा। उदाहरणतया दानशीलता और दान देने की विशेषता उस व्यक्ति के पक्ष में उपकार है जो लाभान्वित हुआ परन्तु दूसरों की नज़र में सद्गुण समझा जाएगा।

अतः ख़ुदा की प्रकृति का नियम जिस का सिलसिला हमेशा से तथा मनुष्य की बुनियाद के समय से चला आता है वह हमें यह सिखाता है कि ख़ुदा के साथ घनिष्ठ संबंध पैदा होने के लिए यह आवश्यक है कि उसके उपकार और सुन्दरता से फायदा उठाया हो। अभी हम उल्लेख कर चुके हैं कि उपकार से अभिप्राय ख़ुदा तआला के वे शिष्टाचार के नमूने हैं जो किसी मनुष्य ने स्वयं अपने बारे में स्वयं अपनी आंखों से देखे हों। उदारहणतया निराश्रयता, विनम्रता,

कमज़ोरी और अनाथ होने के समय में ख़ुदा उस का अभिभावक हुआ हो तथा आवश्यकताओं और ज़रूरतों के समय में ख़ुदा ने स्वयं उस की आवश्यकताओं की पूर्ति की हो और कठोर एवं कमर तोड़ने वाले शोकों के समय में ख़ुदा ने स्वयं उसकी सहयता की हो और ख़ुदा की अभिलाषा के समय में किसी पथ प्रदर्शक और रहनुमा के माध्यम के बिना स्वयं ख़ुदा ने उसका मार्ग-दर्शन किया हो। और सुन्दरता से अभिप्राय भी ख़ुदा के वही सद्‌गुण हैं जो उपकार के रंग में भी देखे जाते हैं। उदाहरण के तौर पर ख़ुदा की पूर्ण क़ुदरत और वह नर्मी, वह कृपा, वह प्रतिपालन और वह दया जो ख़ुदा में पाए जाते हैं और उसका वह सामान्य प्रतिपालन जो दिखाई दे रहा है और उसकी वे सामान्य नेमतें जो मनुष्य के आराम के लिए बहुतायत के साथ मौजूद हैं और उसका वह ज्ञान जिसे मनुष्य नबियों के द्वारा प्राप्त करता तथा उसके द्वारा मौत और तबाही से बचता है और उसकी यह विशेषता कि वह बेचैनों और थके-हारे लोगों की दुआएं स्वीकार करता है और उसकी यह खूबी कि जो लोग उसकी ओर झुकते हैं वह उन से अधिक उनकी ओर झुकता है। ख़ुदा की ये समस्त विशेषताएं उसकी सुन्दरता में सम्मिलित हैं और फिर वही विशेषताएं हैं कि जब एक व्यक्ति विशेष तौर पर उन से लाभान्वित भी हो जाता है तो वह उसके बारे में उपकार भी कहलाती हैं। यद्यपि दूसरे के बारे में केवल सुन्दरता में सम्मिलित हैं। और जो व्यक्ति ख़ुदा तआला की उन विशेषताओं को जो वास्तव में उसकी सुन्दरता और ख़ूबसूरती है उपकार के रंग में भी देख लेता है तो उस का ईमान बहुत ही सुदृढ़ हो जाता है और वह ख़ुदा की ओर ऐसा खिंचा जाता है जैसा कि

एक लोहा चुम्बक की और खिंचा जाता है। ख़ुदा से उसका प्रेम बहुत बढ़ जाता है और ख़ुदा पर उसका भरोसा बहुत सुदृढ़ हो जाता है और चूंकि वह इस बात को परख लेता है कि उसकी सम्पूर्ण भलाई ख़ुदा में है इसलिए उसकी आशाएं ख़ुदा पर बहुत मज़बूत हो जाती हैं और वह स्वाभाविक तौर पर न कि किसी बनावट और आडम्बर से ख़ुदा की ओर झुका रहता है और स्वयं को हर पल ख़ुदा से सहायता पाने का मुहताज देखता है और उसकी इन पूर्ण विशेषताओं की कल्पना से विश्वास रखता है कि वह अवश्य सफल होगा, क्योंकि ख़ुदा के वरदान, कृपा और दान के बहुत से नमूने उसका चश्मदीद अवलोकन होता है। इसलिए उसकी दुआएं शक्ति और विश्वास के झरने से निकलती हैं तथा उसके साहस का प्रण अत्यन्त सुदृढ़ और मज़बूत होता है और अन्ततः ख़ुदा की नेमतों और अनुकम्पाओं को देखकर विश्वास का प्रकाश बड़े ज़ोर के साथ उसके अन्दर प्रवेश कर जाता है और उसकी हस्ती (अस्तित्त्व) पूर्णरूप से जल जाती है और ख़ुदा की श्रेष्ठता और क़ुदरत की कल्पना की प्रचुरता के कारण उस का दिल ख़ुदा का घर हो जाता है। और जिस प्रकार मनुष्य की रूह उसके जीवित होने की अवस्था में कभी उसके शरीर से पृथक नहीं होती, उसी प्रकार प्रतापी ख़ुदा की ओर से जो विश्वास उस के अन्दर दाख़िल हुआ है वह कभी उससे पृथक नहीं होता और पवित्र रूह हर समय उसके अन्दर जोश मारती रहती है तथा उसी पवित्र रूह की शिक्षा से वह बोलता और उसके अन्दर से सच्चाइयां तथा मआरिफ़ निकलते हैं और उसके दिल में सम्माननीय तेजस्वी ख़ुदा की श्रेष्ठता का तम्बू हर समय लगा रहता है। विश्वास, सच्चाई और

प्रेम का आनन्द हर समय पानी के समान उसके अन्दर बहता रहता है जिसकी सिंचाई से उसका प्रत्येक अंग सींचा हुआ दिखाई देता है। आंखों में एक अलग सिंचाई दिखाई देती है। मस्तक पर उस सिंचाई का एक पृथक प्रकाश लहराता हुआ दृष्टिगोचर होता है और चेहरे पर ख़ुदा के प्रेम की एक वर्षा बरसती हुई महसूस होती है और ज़ुबान भी उस प्राकाश की सिंचाई से पूरा हिस्सा लेती है। इसी प्रकार समस्त अंगों पर एक प्रफुल्लता नज़र आती है जैसा कि बहार के बादल के बरसने के बाद बहार के मौसम में वृक्षों की टहनियों, पत्तों, फूलों और फलों में एक मनमोहक ताज़गी महसूस होती है। परन्तु जिस व्यक्ति में यह रूह नहीं उतरी और उसे यह सिंचाई प्राप्त नहीं हुई उसका सम्पूर्ण शरीर मुर्दा की तरह होता है और यह सिंचाई तथा ताज़गी एवं प्रफुल्लता जिसकी क़लम व्याख्या नहीं कर सकती यह उस मुर्दा दिल को मिल ही नहीं सकती जिसको विश्वास के प्रकाश रूपी झरने ने हरा भरा नहीं किया, बल्कि उस से एक प्रकार की सड़ी हुई दुर्गन्ध आती है, परन्तु वह व्यक्ति जिसे यह प्रकाश दिया गया है और जिसके अन्दर यह झरना फूट निकला है उसके लक्षणों में से यह एक लक्षण है कि उसका मन हर समय यही चाहता है कि प्रत्येक बात में तथा प्रत्येक कथन में और प्रत्येक कार्य में ख़ुदा से शक्ति पाए, उसी में उसका आनन्द होता है और उसी में उसका आराम होता है। वह उसके बिना जीवित ही नहीं रह सकता। और शक्ति पाने के लिए जो शब्द ख़ुदा के कलाम में निर्धारित किए गए हैं वही हैं जो इस्तिग़फ़ार (पापों की माफ़ी मांगना) के नाम से प्रसिद्ध हैं।

इस्तिग़फ़ार के वास्तविक और मूल अर्थ ये हैं कि ख़ुदा से

विनती करना कि मनुष्य होने की कोई कमज़ोरी प्रकट न हो और ख़ुदा प्रकृति (फ़ितरत) को अपनी शक्ति का सहारा दे और अपने समर्थन और सहायता के घेरे के अन्दर ले ले। यह शब्द غَفر से लिया गया है जो ढांकने को कहते हैं। तो इसके ये अर्थ हैं कि ख़ुदा अपनी शक्ति के साथ क्षमायाचक व्यक्ति की कमज़ोरी को ढांक ले। परन्तु इसके बाद सामान्य लोगों के लिए इस शब्द के अर्थ और भी विशाल किए गए और यह भी अभिप्राय लिया गया कि ख़ुदा गुनाह (पाप) को जो हो चुका है ढांक ले। किन्तु असल और वास्तविक अर्थ यही हैं कि ख़ुदा अपनी ख़ुदाई की शक्ति के साथ क्षमायाचक को जो पाप की क्षमायाचना करता है स्वाभाविक कमज़ोरी से बचाए और अपनी शक्ति से शक्ति प्रदान करे तथा अपने ज्ञान से ज्ञान प्रदान करे और अपने प्रकाश से प्रकाश दे, क्योंकि ख़ुदा मनुष्य को पैदा करके उस से अलग नहीं हुआ, बल्कि वह जैसा कि मनुष्य का स्रष्टा है और उसकी सम्पूर्ण एवं बाह्य शक्तियों का पैदा करने वाला है वैसा ही वह मनुष्य का क़ायम रखने वाला भी है। अर्थात् जो कुछ बनाया है उसे अपने विशेष सहारे से सुरक्षित रखने वाला है। तो जब कि ख़ुदा का नाम क़य्यूम (क़ायम रखने वाला) भी है अर्थात् अपने सहारे से सृष्टि को क़ायम रखने वाला। इसलिए मनुष्य के लिए अनिवार्य है कि जैसा कि वह ख़ुदा के सृजन करने के गुण से पैदा हुआ है ऐसा ही वह अपनी पैदायश के नक़्श को ख़ुदा की क़य्यूमियत (कायम रखने) के द्वारा बिगड़ने से बचाए, क्योंकि ख़ुदा के स्रष्टा होने के गुण ने मनुष्य पर यह उपकार किया कि उस को ख़ुदा के रूप पर बनाया। तो इसी प्रकार ख़ुदा की क़य्यूमियत ने चाहा कि वह उस

पवित्र मानवीय नक़्श को जो ख़ुदा के दोनों हाथों से बनाया गया है गन्दा और ख़राब न होने दे। इसलिए मनुष्य को शिक्षा दी गई कि वह क्षमायाचना (इस्तिग़फ़ार) के द्वारा शक्ति मांगे। तो यदि संसार में गुनाह का अस्तित्त्व भी न होता तब भी इस्तिग़फ़ार होता। क्योंकि असल इस्तिग़फ़ार इसलिए है कि जो ख़ुदा के स्रष्टा होने ने मनुष्यता की इमारत बनाई है वह इमारत ध्वस्त न हो और क़ायम रहे तथा ख़ुदा के सहारे के बिना किसी वस्तु का क़ायम (स्थापित) रहना संभव नहीं। अतः मनुष्य के लिए यह एक स्वाभाविक आवश्यकता थी जिस के लिए इस्तिग़फ़ार का निर्देश है। इसी की ओर पवित्र क़ुर्आन का निर्देश है। इसी की ओर पवित्र क़ुर्आन में यह संकेत किया गया है कि

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ ۚ (अलबक़रह – 256)

अर्थात् ख़ुदा ही है जो उपासना (इबादत) के योग्य है, क्योंकि वही जीवित करने वाला है और उसी के सहारे से मनुष्य जीवित रह सकता है। अर्थात् मनुष्य का प्रकटन एक स्रष्टा को चाहता है और एक क़य्यूम को ताकि स्रष्टा उसे पैदा करे और क़य्यूम उसको बिगड़ने से सुरक्षित रखे। अतः वह ख़ुदा स्रष्टा भी है और क़य्यूम भी। फिर जब मनुष्य पैदा हो गया तो स्रष्टा होने का काम तो पूरा हो गया परन्तु विशेषताओं का काम हमेशा के लिए है। इसीलिए हमेशा के इस्तिग़फ़ार की आवश्यकता पड़ी। तो ख़ुदा की प्रत्येक विशेषता के लिए एक वरदान है तो इस्तिग़फ़ार क़य्यूमियत की विशेषता का लाभ प्राप्त करने के लिए करते रहने की ओर संकेत सूरह फ़ातिहा की इस आयत में है –

اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۝ (अलफ़ातिहा – 3)

अर्थात् हम तेरी ही इबादत (उपासना) करते हैं और तुझ से ही इस बात की सहायता चाहते हैं कि तेरी क़य्यूमियत और रबूबियत (प्रतिपालन) हमें सहायता दे और हमें ठोकर से बचाए ताकि ऐसा न हो कि कमज़ोरी प्रकट हो जाए और हम इबादत न कर सकें।

इस सम्पूर्ण विवरण से स्पष्ट है कि इस्तिग़फ़ार की विनती के असल अर्थ यह हैं कि वह इसलिए नहीं होती कि कोई अधिकार मारा गया है बल्कि इस इच्छा से होती है कि कोई अधिकार मारा न जाए और मानवीय प्रकृति स्वयं को कमज़ोर देख कर स्वाभाविक तौर पर ख़ुदा से शक्ति मांगती है जैसा कि बच्चा मां से दूध मांगता है। तो जैसा कि ख़ुदा ने प्रारंभ से मनुष्य को ज़ुबान, आंख, दिल और कान इत्यादि प्रदान किए हैं ऐसा ही इस्तिग़फ़ार की इच्छा प्रांरभ से ही प्रदान की है और उसे महसूस कराया है कि वह अपने अस्तित्त्व के साथ ख़ुदा से सहायता पाने का मुहताज है। इसी की ओर इस आयत में संकेत है –

وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

(मुहम्मद – 20)

अर्थात् ख़ुदा से निवेदन कर कि तेरी प्रकृति को मनुष्य होने की कमज़ोरी से सुरक्षित रखे और अपनी ओर से प्रकृति (फ़ितरत) को ऐसी शक्ति दे कि वह कमज़ोरी प्रकट न होने पाए तथा इसी प्रकार उन पुरुषों और उन स्त्रियों के लिए जो तुझ पर ईमान लाते हैं बतौर शफ़ाअत के दुआ करता रह ताकि जो स्वाभाविक कमज़ोरी से उन से ग़लतियां होती हैं वे उनके दण्ड से सुरक्षित रहें और उनका भावी जीवन गुनाहों से भी सुरक्षित हो जाए। यह आयत मासूमियत और

शफ़ाअत की उच्च श्रेणी की फ़िलास्फ़ी पर आधारित है और यह इस बात की ओर संकेत करती है कि मनुष्य उच्च श्रेणी के इस्मत के मुक़ाम तथा शफ़ाअत की श्रेणी पर तभी पहुंच सकता है कि जब अपनी कमज़ोरी को रोकने के लिए दूसरों को गुनाह के ज़हर से मुक्ति देने के लिए हर दम तथा प्रतिपल दुआ मांगता रहता है और विनयपूर्वक ख़ुदा तआला की शक्ति को अपनी ओर खींचता है और फिर चाहता है कि उस शक्ति से दूसरों को भी हिस्सा मिले जो ईमान के माध्यम से उस से पैवन्द करते हैं। मासूम मनुष्य को ख़ुदा से शक्ति मांगने की इसलिए आवश्यकता है कि मानवीय प्रकृति स्वयं में तो कोई ख़ूबी नहीं रखती बल्कि हर दम ख़ुदा से खूबी पाती है और स्वयं में कोई शक्ति नहीं रखती बल्कि हर दम ख़ुदा से शक्ति पाती है, और स्वयं में कोई पूर्ण प्रकाश नहीं रखती बल्कि ख़ुदा से उस पर प्रकाश उतरता है। इसमें असल राज़ यह है कि पूर्ण प्रकृति को केवल एक आकर्षण दिया जाता है ताकि वह उच्च शक्ति को अपनी ओर खींच सके परन्तु शक्ति का खज़ाना केवल ख़ुदा का अस्तित्त्व है। उसी ख़ज़ाने से फ़रिश्ते भी अपने लिए शक्ति खींचते हैं और इसी प्रकार कामिल इन्सान भी उसी शक्ति के उद्गम से बन्दगी की नाली के द्वारा सच्चरित्रता (इस्मत) और फ़ज़्ल (कृपा) की शक्ति खींचता है। इसलिए मनुष्यों में से पूर्ण मासूम वही है जो इस्तिग़फ़ार से ख़ुदाई शक्ति को अपनी ओर खींचता है तथा उस आकर्षण के लिए विनय औऱ गिड़गिड़ाने का सिलसिला हर पल जारी रखता है ताकि उस पर प्रकाश उतरता रहे, और ऐसे दिल को उस घर से उपमा दे सकते हैं जिसके पूरब, पश्चिम तथा हर ओर से समस्त दरवाज़े सूर्य

के सामने हैं। तो हर समय सूर्य का प्रकाश उसमें पड़ता है किन्तु जो व्यक्ति ख़ुदा से शक्ति नहीं मांगता वह उस कोठरी के समान है जिसके दरवाज़े चारों तरफ से बन्द हैं जिसमें एक कण भर प्रकाश भी नहीं पड़ सकता। तो इस्तिग़फ़ार क्या चीज़ है। यह उस उपकरण के समान है जिसके मार्ग से प्रकाश उतरता है। तौहीद का सम्पूर्ण राज़ इसी सिद्धान्त से सम्बद्ध है कि सच्चरित्रता (इस्मत) की विशेषता को मनुष्य की एक स्थायी जायदाद न ठहराया जाए, बल्कि उसकी प्राप्ति के लिए केवल ख़ुदा को उद्गम समझा जाए। ख़ुदा तआला की हस्ती को उपमा के तौर पर दिल से समानता है जिसमें शुद्ध ख़ून का भण्डार एकत्र रहता है और कामिल इन्सान का इस्तिग़फ़ार उन नाड़ियों एवं शिराओं के समान है जो दिल के साथ संलग्न हैं और उसमें शुद्ध से ख़ून खींचती हैं और समस्त अंगों में विभाजित करती हैं जो ख़ून के मुहताज हैं।

ज़ंब (गुनाह) और जुर्म (अपराध) में अन्तर

यह कहना सर्वथा ग़लत है कि आयत

(ताहा – 75) وَ اسۡتَغۡفِرۡ لِذَنۡبِكَ में ज़ंब का शब्द मौजूद है जो गुनाह (पाप) को कहते हैं। क्योंकि ज़ंब और जुर्म में अन्तर है। जुर्म का शब्द तो हमेशा ऐसे गुनाह के लिए आता है जो दण्डनीय होता है परन्तु ज़ंब का शब्द मनुष्य होने की कमज़ोरी के लिए भी आ जाता है। इसीलिए नबियों पर मानवीय कमज़ोरी के कारण 'ज़ंब' का शब्द बोला गया है, परन्तु जुर्म का शब्द नहीं बोला गया। और ख़ुदा की किताब में किसी नबी को मुजरिम के शब्द से नहीं पुकारा

गया तथा ख़ुदा की किताब में अर्थात् पवित्र क़ुर्आन में मुजरिम के लिए तो नर्क के दण्ड का वादा है। अर्थात् ख़ुदा की तरफ से अहद (प्रतिज्ञा) है कि वह नर्क में डाला जाएगा, परन्तु 'मुज़निब' के लिए दण्ड का कोई वादा नहीं। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है –

مَنْ يَّأْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۝

(ताहा – 75)

अर्थात् जो व्यक्ति ख़ुदा के पास मुजरिम होकर आएगा उसका दण्ड नर्क है। न उसमें वह मरेगा और न जीवित रहेगा। तो यहां مُجْرِمًا कहा مُذْنِبًا नहीं कहा। क्योंकि कुछ अवस्थाओं में मासूम को भी मुज़निब (مُذْنِبْ) कह सकते हैं परन्तु मुजरिम नहीं कह सकते। इस पर एक और तर्क है और वह यह है कि सूरह आले इमरान में यह आयत है -

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِيْ ؕ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا ؕ

(आलेइमरान – 82)

इस आयत से स्पष्ट आदेश द्वारा सिद्ध हुआ कि समस्त अंबिया जिन में हज़रत मसीह भी सम्मलित हैं मामूर थे कि आंहज़रत सल्लल्लाहु वसल्लम पर ईमान लाएं। और उन्होंने इक़रार किया कि हम ईमान लाए और फिर जब आयत –

وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ (मुहम्मद – 20)

को इस आयत के साथ मिलाकर पढ़ा जाए और ज़ंब से अभिप्राय नऊज़ुबिल्लाह जुर्म लिया जाए तो हज़रत ईसा भी इस

आयत की दृष्टि से मुजरिम ठहरेंगे क्योंकि वह भी इस आयत की दृष्टि से उन मोमिनों में सम्मलित हैं जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए। तो निस्सन्देह वह भी मुज़निब ठहरे। यह मुक़ाम ईसाइयों को ध्यानपूर्वक देखना चाहिए। इन आयतों से पूर्ण स्पष्टता के साथ सिद्ध हुआ कि यहां ज़ंब जुर्म के अर्थ में नहीं है, बल्कि मानवीय कमज़ोरी का नाम ज़ंब है जो आरोप के योग्य नहीं और मख़्लूक़ (सृष्टि) की प्रकृति के लिए आवश्यक है कि यह कमज़ोरी उस में मौजूद हो। और कमज़ोरी का नाम ज़ंब इसलिए रखा है कि मनुष्य की प्रकृति में स्वाभाविक तौर पर यह ग़लती और कमी रखी है ताकि वह हर समय ख़ुदा का मुहताज रहे और ताकि उस कमज़ोरी को दबाने के लिए हर समय ख़ुदा से शक्ति मांगता रहे। इसमें सन्देह नहीं कि मनुष्य होने की कमज़ोरी एक ऐसी चीज़ है कि यदि ख़ुदा की शक्ति उस के साथ सम्मलित न हो तो इसका परिणाम ज़ंब के अतिरिक्त और कुछ नहीं। अतः जो चीज़ ज़ंब की ओर मिलाती है उसका नाम रूपक के तौर पर ज़ंब रखा गया है और यह मुहावरा प्रसिद्ध एवं परिचित है कि जो बचाव कुछ बीमारियों को पैदा करते हैं कभी उन्हीं बचावों का नाम बीमारियां रख देते हैं। तो प्रकृति की कमज़ोरी भी एक बीमारी है जिस का इलाज इस्तिग़फ़ार है।

अतः ख़ुदा की किताब ने मनुष्य होने की कमज़ोरी को ज़ंब के स्थान पर इस्तेमाल किया है और स्वयं गवाही दी है कि मनुष्य में स्वाभाविक कमज़ोरी है, जैसा कि वह फ़रमाता है –

خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفاً (अन्निसा – 29)

अर्थात् मनुष्य कमज़ोर पैदा किया गया है यही कमज़ोरी है कि यदि ख़ुदा की शक्ति उस के साथ सम्मिलित न हो तो भिन्न-भिन्न प्रकार के गुनाहों का कारण हो जाती है। तो इस्तिग़फ़ार की वास्तविकता यह है कि हर समय और हर दम और प्रतिक्षण ख़ुदा से सहायता मांगी जाए और उससे निवेदन किया जाए कि मनुष्य होने की कमज़ोरी जो मनुष्य होने का एक ज़ंब है जो उसके साथ लगा हुआ है प्रकट न हो। तो इस्तिग़फ़ार पर निरन्तर इस बात पर तर्क है कि इस ज़ंब पर विजय पाई और प्रकटन में न आ सका तथा ख़ुदा का प्रकाश उतरा और उसे दबा लिया। यहां यह बात याद रखने योग्य है कि इस्तिग़फ़ार का शब्द ग़फ़र (غَفر) से निकला है और इस के असल अर्थ दबाने और ढांकने के हैं। अर्थात् यह निवेदन करना कि मनुष्य होने की कमज़ोरी प्रकट होकर कोई हानि न पहुंचाए और वह ढकी रहे। क्योंकि मनुष्य चूंकि ख़ुदा नहीं है और न ख़ुदा से नि:स्पृह है। इसलिए वह उस बच्चे की तरह है जो हर क़दम पर मां का मुहताज होता है ताकि वह उसे गिरने से बचाए और ठोकर से सुरक्षित रखे ऐसा ही यह भी हर क़दम पर ख़ुदा का मोहताज होता है ताकि उसको ठोकर और फिसलने से बचाए अत: इसके इलाज के लिए इस्तिग़फ़ार है।

कभी यह शब्द تَوسّع (विस्तार) के तौर पर उन लोगों के लिए भी बोला जाता है जो पहले किसी गुनाह को कर लेते हैं और उस स्थान पर इस्तिग़फ़ार के अर्थ ये होते हैं कि जो गुनाह किया जा चुका है उसके दण्ड से ख़ुदा बचाए परन्तु यह दूसरे अर्थ ख़ुदा के सानिध्य प्राप्त (मुक़र्रब) लोगों के पक्ष में सही और वैध नहीं हैं।

कारण यह कि ख़ुदा ने तो उन पर पहले से प्रकट किया हुआ होता है कि वे कोई दण्ड नहीं पांएगे और उन को जन्नत (स्वर्ग) के उच्च स्थान मिलेंगे और वे ख़ुदा की रहमत की गोद में बिठाए जाएंगे, न एक बार बल्कि सैकड़ों बार उनको ऐसे वादे दिए जाते हैं और उन्हें स्वर्ग दिखाया जाता है। फिर यदि वे उन अर्थों की दृष्टि से इस्तिग़फ़ार करें कि वे अपने गुनाहों के कारण नर्क में न पड़ें तो ऐसा इस्तिग़फ़ार तो स्वयं उनके लिए एक गुनाह होगा कि वे ख़ुदा के वादों पर विश्वास नहीं करते और स्वयं को ख़ुदा की रहमत (दया) से दूर समझते हैं। फिर ऐसा व्यक्ति जिसके बारे में ख़ुदा तआला यह फ़रमाए –

وَمَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ۝ (अलअंबिया – 108)

अर्थात् हमने तुझे समस्त संसार के लिए रहमत करके भेजा है और तू साक्षात् रहमत है। वह यदि अपने बारे में ही यह सन्देह करे कि ख़ुदा की रहमत मेरे साथ होगी या नहीं तो फिर दूसरों के लिए रहमत का कारण क्योंकर होगा।

ये समस्त सन्दर्भ उन लोगों के लिए जो न्यायपूर्वक सोचते हैं इस वास्तविकता को स्पष्ट तौर पर खोलते हैं कि इस्तिग़फ़ार के दूसरे अर्थ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सम्बद्ध करना बड़ी ग़लती और शरारत है, बल्कि मासूम के लिए प्रथम लक्षण यही है कि वह सब से अधिक इस्तिग़फ़ार में व्यस्त रहे और हर समय तथा हर हालत में मनुष्य होने की कमज़ोरी से सुरक्षित रहने के लिए ख़ुदा तआला से शक्ति मांगता रहे, जिसे दूसरे शब्दों में इस्तिग़फ़ार कहते हैं, क्योंकि यदि एक बच्चा हर समय मां के हाथ के सहारे से चलता है और पसन्द नहीं करता कि मां से एक सेकण्ड भी दूर रहे। वह

बच्चा निस्सन्देह ठोकर से बच रहेगा, परन्तु वह बच्चा जो मां से अलग होकर चलता है और स्वयं किसी भयावह सीढ़ी पर चढ़ता है और कभी किसी भयावह सीढ़ी से उतरता है वह अवश्य एक दिन गिरेगा और उसका गिरना सख़्त होगा। तो जिस प्रकार सौभाग्यशाली बच्चे के लिए यही उचित है कि वह अपनी प्यारी मां से हरगिज़ अलग न रहे और उसकी गोद से हरगिज़ पृथक न हो और उसके दामन को न छोड़े। यही आदत उन मुबारक पवित्र लोगों की होती है जो ख़ुदा की चौखट पर ऐसे जा पड़ते हैं जैसे कि मां की गोद में बच्चे और जैसा कि एक बच्चा अपना सब काम अपनी मां की शक्ति से निकालता है तथा प्रत्येक दूसरा बच्चा जो उस से विरोध करता है या कोई कुत्ता उसके सामने आता है या कोई अन्य भय प्रकट होता है या किसी ग़लती के स्थान पर स्वयं को पाता है तो तुरन्त अपनी मां को पुकारता है ताकि वह शीघ्र उसकी ओर दौड़े और उसे उस विपत्ति से बचाए। यही हाल उन रूहानी बच्चों का होता है जो बिल्कुल ऐसे ही अपने रब्ब को मां के समान समझ कर उसकी शक्तियों को अपना भंडार समझते हैं और हर समय और हर दम उसकी शक्तियों को मांगते रहते हैं और जिस प्रकार दूध पीता बच्चा जब भूख के समय अपना मुंह अपनी मां के स्तन पर रख देता है और अपने स्वाभाविक आकर्षण से दूध को अपनी ओर खींचना चाहता है तो मां महसूस करती है कि रोने और चीखने के साथ उस बच्चे के नर्म-नर्म होंठ उसके स्तन पर जा लगे हैं तो स्वाभाविक तौर पर उसका दूध जोश मारता है और उस बच्चे के मुंह में गिरता जाता है। तो यही क़ानून उन बच्चों के लिए भी है जो रूहानी दूध के अभिलाषी और जिज्ञासु हैं।

शफ़ाअत (सिफ़ारिश) की आवश्यकता

संभव है कि यहां कोई व्यक्ति यह प्रश्न भी प्रस्तुत करे कि मनुष्य को शफ़ाअत की क्यों आवश्यकता है तथा क्यों वैध नहीं कि एक व्यक्ति सीधे तौर पर तौबा और इस्तिग़फ़ार करके ख़ुदा से माफी प्राप्त कर ले। इस प्रश्न का उत्तर प्रकृति का नियम स्वयं देता है। क्योंकि यह बात मान्य है और किसी को इस से इन्कार नहीं हो सकता कि मनुष्य बल्कि समस्त प्राणियों की नस्ल का सिलसिला शफ़ाअत पर ही चल रहा है। क्योंकि हम अभी उल्लेख कर चुके हैं कि शफ़ाअत का शब्द شفع से निकला है जिसके अर्थ हैं जुफ़्त (जोड़)। तो इसमें क्या सन्देह हो सकता है कि नस्ल चलाने की समस्त बरकतें شفع से ही पैदा हुई हैं और हो रही हैं। एक मनुष्य के शिष्टाचार, शक्ति और रूप दूसरे मनुष्य में इसी माध्यम से आ जाते हैं। अर्थात् वह एक जोड़ का ही परिणाम होता है। इसी प्रकार एक प्राणी जो दूसरे से पैदा होता है। उदाहरणतया बकरी, बैल, गधा इत्यादि वे समस्त शक्तियां जो एक प्राणी से दूसरे प्राणी में स्थानांतरित होती हैं वे भी वास्तव में एक जोड़ का ही परिणाम होता है। तो यही जोड़ जब इन अर्थों से लिया जाता है कि एक अपूर्ण एक पूर्ण से रूहानी संबंध पैदा करके उसकी रूह से अपनी कमज़ोरी का इलाज पाता है और कामवासना संबंधी भावनाओं से सुरक्षित रहता है तो उस जोड़ का नाम शफ़ाअत है। जैसा कि चन्द्रमा सूर्य के सामने हो कर उस से एक प्रकार की एकता और जोड़ प्राप्त करता है तो तुरन्त ही उस प्रकाश को प्राप्त कर लेता है

जो सूर्य में है। और चूंकि उस रूहानी जोड़ को जो प्रेम से भरपूर दिलों को नबियों के साथ प्राप्त होता है उस शारीरिक जोड़ से एक अनुकूलता है जो ज़ैद को उदाहरणतया अपने बाप से है। इसलिए यह रूहानी लाभ प्राप्त भी ख़ुदा के नज़दीक सन्तान कहलाती है। और इस पैदायश को पूर्ण रूप से प्राप्त करने वाले वही नक़्श और शिष्टाचार तथा बरकतें प्राप्त कर लेते हैं जो नबियों में मौजूद होते हैं, तो असल में यही वास्तविकता शफ़ाअत है। और जिस प्रकार शारीरिक شفع अर्थात् जोड़ की यह व्यक्तिगत विशिष्टता है कि सन्तान उस व्यक्ति की यथास्थिति होती है जिस से यह जोड़ किया गया है ऐसी ही रूहानी जोड़ को भी यही विशिष्टता है। अतः यही शफ़ाअत की वास्तविकता है कि ख़ुदा का प्रकृति का नियम शारीरिक एवं आध्यात्मिक (रूहानी) इस प्रकार से हमेशा से चला आ रहा है कि समस्त बरकतें जोड़ से ही पैदा होती हैं अन्तर केवल यह है कि एक प्रकार को शुफ़अ (شفع) कहा गया है और दूसरे प्रकार का नाम शफ़ाअत रखा गया है और मनुष्य को जिस प्रकार कि नस्ल का सिलसिला सुरक्षित रखने के लिए शुफ़अ (شفع) की आवश्यकता है इसी प्रकार रूहानियत का सिलसिला बाक़ी रखने के लिए शफ़ाअत की आवश्यकता है और ख़ुदा के कलाम ने दोनों प्रकारों को वर्णन कर दिया है। जैसे कि एक स्थान पर अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में यह फ़रमाता है कि ख़ुदा ने आदम को जोड़ा पैदा किया और फिर उस जोड़े से बहुत सी सृष्टि पुरुष और स्त्रियां पैदा कीं। इसी प्रकार फ़रमाता है कि ख़ुदा ने पृथ्वी पर अपना ख़लीफ़ा पैदा किया जो आदम था, जिसमें ख़ुदाई

रूह थी। फिर वह प्रकाश आदम से दूसरे नबियों में स्थानांतरित हो गया और इब्राहीम अलैहिस्सलाम, इस्माईल अलैहिस्सलाम, याक़ूब अलैहिस्सलाम, मूसा अलैहिस्सलाम, दाऊद अलैहिस्सलाम और ईसा अलैहिस्सलाम इत्यादि सब उस प्रकाश के वारिस हुए, यहां तक कि अन्तिम वारिस हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अवतरित हुए। तो इन समस्त पवित्र नबियों ने जैसा कि आदम से विरासत में शारीरिक नक़्श पाए इसी प्रकार आदम के ख़लीफ़ा होने की हैसियत से उस से ख़ुदाई रूह को भी पाया। फिर उन के द्वारा कभी-कभी अन्य लोग भी वारिस होते गए।

पवित्र क़ुर्आन से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत का प्रमाण

पवित्र क़ुर्आन में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत के बारे में विभिन्न स्थानों में वर्णन किया गया है, जैसा कि एक स्थान पर फ़रमाता है

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ط

(आलेइमरान – 32)

अनुवाद- तू कहदे यदि तुम ख़ुदा से प्रेम करते हो तो आओ मेरा अनुकरण करो ताकि ख़ुदा भी तुम से प्रेम करे और तुम्हारे गुनाह क्षमा करे।

अब देखो कि यह आयत कितनी स्पष्टता से बता रही है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पद-चिह्नों पर चलना जिस की अनिवार्य बातों में से प्रेम, आदर और आंहज़रत सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम का आज्ञापालन है। इसका आवश्यक परिणाम यह है कि मनुष्य ख़ुदा का प्रियतम बन जाता है और उसके गुनाह (पाप) क्षमा किए जाते हैं और कोई गुनाह का विष खा चुका है तो प्रेम, आज्ञापालन तथा अनुकरण के विषनाशक (तिरयाक़) से उस विष का प्रभाव जाता रहता है और जिस प्रकार दवा द्वारा एक मनुष्य रोग से पवित्र हो सकता है ऐसा ही एक व्यक्ति गुनाह से पवित्र हो जाता है और जिस प्रकार प्रकाश अंधकार को दूर करता है और विषनाशक विष का प्रभाव दूर करता है, और आग जलाती है इसी प्रकार सच्चा आज्ञापालन और प्रेम का प्रभाव होता है। देखो आग कैसे एक दम में जला देती है। तो इसी प्रकार जोश से भरपूर नेकी जो केवल ख़ुदा का प्रताप (जलाल) प्रकट करने के लिए की जाती है वह गुनाहों के कूड़ा-कर्कट को भस्म करने के लिए आग का आदेश रखती है। जब एक मनुष्य सच्चे दिल से हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाता है और आप की सम्पूर्ण श्रेष्ठता और बुज़ुर्गी को मान कर पूर्ण सच्चाई, श्रद्धा, प्रेम और आज्ञापालन से आप का अनुकरण करता है यहां तक कि पूर्ण आज्ञापालन के कारण फ़ना के स्थान तक पहुंच जाता है तब इस घनिष्ठ संबंध के कारण जो आप के साथ हो जाता है वह ख़ुदा का प्रकाश जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरता है उस से यह व्यक्ति भी हिस्सा लेता है। तब चूंकि अंधकार और प्रकाश की जो परस्पर विपरीत हैं वह अंधकार जो उसके अन्दर है दूर होना आरंभ हो जाता है यहां तक कि अंधकार का कोई हिस्सा उसके अन्दर शेष नहीं रहता। और फिर उस प्रकाश से शक्ति पाकर

उस से उच्च स्तर की नेकियां प्रकट होती हैं और उसके प्रत्येक अंग में से ख़ुदा के प्रेम का प्रकाश चमक उठता है। तब आन्तरिक अंधकार पूर्णतया दूर हो जाता है तथा ज्ञानात्मक रूप से भी प्रकाश पैदा हो जाता है और क्रियात्मक रूप से भी प्रकाश पैदा हो जाता है। अन्तत: उन प्रकाशों के एकत्र होने से गुनाह का अंधकार उसके दिल से कूच करता है। यह तो स्पष्ट है कि प्रकाश और अंधकार एक स्थान पर जमा नहीं हो सकते। इसलिए ईमान का प्रकाश और गुनाह का अंधकार भी एक जगह जमा नहीं हो सकते और यदि ऐसे व्यक्ति से संयोगवश कोई गुनाह प्रकटन में नहीं आया तो उसे इस अनुकरण से यह लाभ होता है कि भविष्य में गुनाह की शक्ति उस से समाप्त हो जाती है और नेकी करने की ओर उसको दिलचस्पी पैदा हो जाती है। जैसा कि अल्लाह तआला उसके बारे में स्वयं पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है –

حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ
اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ط (अलहुजुरात – 8)

कि ख़ुदा ने तुम पर पवित्र रूह उतार कर प्रत्येक नेकी की तुम्हें प्रेरणा दी और कुफ्र एवं पाप और अवज्ञा तुम्हारी दृष्टि में अप्रिय कर दिया।

परन्तु यदि यहां यह प्रश्न हो कि वह प्रकाश जो नबी अलैहिस्सलाम के द्वारा अनुकरण करने वाले को मिलता है जिस से गुनाह की भावनाएं दूर हो जाती हैं वह क्या चीज़ है, तो इस प्रश्न का उत्तर यह है कि वह एक पवित्र मारिफ़त है जिसके साथ सन्देह का कोई अंधकार नहीं। और वह एक पवित्र प्रेम है जिसके साथ

कोई कामवासना संबंधी उद्देश्य नहीं। और वह एक पवित्र आनन्द है जो समस्त आनन्दों से बढ़ कर है जिसके साथ कोई अपवित्रता नहीं और यह एक शक्तिशाली आकर्षण है जिस पर कोई आकर्षण विजयी नहीं और एक शक्तिशाली प्रभाव वाला तिरयाक़ है जिस से समस्त आन्तरिक विष दूर होते हैं। ये पांच चीज़ें हैं जो प्रकाश के तौर पर रूहलक़ुदूस के साथ सच्चा अनुकरण करने वालों के दिल पर उतरती हैं। तो ऐसा दिल न केवल गुनाह से पृथकता ग्रहण करता है बल्कि स्वाभाविक तौर पर उस से नफ़रत करने वाला भी हो जाता है। इन पांच चीज़ों की शक्ति का अलग-अलग वर्णन करना तो बहुत विस्तार चाहता है परन्तु केवल पवित्र मारिफ़त की विशेषताओं को किसी सीमा तक विस्तारपूर्वक वर्णन करना इस वास्तविकता को समझने के लिए पर्याप्त है कि गुनाह से पवित्र मारिफ़त कैसे रोकती है।

यह तो स्पष्ट है कि मनुष्य बल्कि जानवर भी प्रत्येक हानिकारक वस्तु के बारे में निश्चित और सही ज्ञान पाकर फिर उसके नज़दीक नहीं जा सकता। चोर को यदि यह सूचना हो कि जिस स्थान पर मैं सेंध लगाना चाहता हूं उस स्थान पर गुप्त तौर पर एक जमाअत खड़ी है जो ठीक सेंध लगाने की हालत में मुझे पकड़ लेगी तो वह इस बात पर हरगिज़ हिम्मत नहीं कर सकता कि सेंध लगाए, बल्कि एक पक्षी भी इस बात को ताड़ जाए कि ये कुछ दाने जो मेरे लिए पृथ्वी पर फैलाए गए हैं उनके नीचे जाल है तो वह उन दानों के निकट नहीं आता। ऐसा ही यदि उदाहरणतया एक बहुत उत्तम खाना पकाया गया हो परन्तु किसी व्यक्ति को यह मालूम हो जाए कि इस खाने में विष है तो वह

कभी उस खाने के निकट नहीं आता। तो इन समस्त अवलोकनों से बिल्कुल स्पष्ट है कि मनुष्य जब एक हानिकारक वस्तु के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर ले तो कभी उस वस्तु की ओर दिलचस्पी नहीं करता बल्कि उसकी शक्ल से भागता है। इसलिए यह बात स्वीकार करने योग्य है कि यदि मनुष्य को किसी माध्यम से इस बात का ज्ञान हो जाए कि गुनाह ऐसा घातक विष है जो तुरन्त मार डालता है तो निस्सन्देह इस जानकारी के बाद मनुष्य गुनाह हरगिज़ नहीं करेगा। किन्तु यहाँ स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न प्रस्तुत होता है कि वह माध्यम कौन सा है। क्या बुद्धि यह माध्यम हो सकती है। तो इसका यही उत्तर है कि बुद्धि हरगिज़ पूर्ण माध्यम नहीं हो सकती, जब तक कोई आकाशीय सहायक न हो, क्योंकि दिल में यह विश्वास होना कि गुनाह के लिए वास्तव में एक दण्ड है जिस से मनुष्य भाग नहीं सकता। यह विश्वास पूर्णरूप से उस समय हो सकता है कि जब पूर्णरूप से मालूम हो कि ख़ुदा भी है जो गुनाह पर दण्ड दे सकता है। परन्तु एकमात्र बुद्धिमान जिस को आकाश से कोई प्रकाश नहीं मिला, ख़ुदा तआला पर पूर्णरूप से विश्वास नहीं कर सकता, क्योंकि उसने ख़ुदा के कलाम को नहीं सुना और न उसके चेहरे को देखा। इसलिए उसको ख़ुदा तआला के संबंध में बशर्ते कि वह पृथ्वी एवं आकाश की सृष्टियों पर विचार करके सही परिणाम तक पहुंच सके केवल इतना ज्ञान हो सकता है कि इन समस्त कारीगिरियों का कोई रचयिता होना चाहिए, परन्तु इस निश्चित ठोस ज्ञान तक नहीं पहुंच सकता कि वह रचयिता मौजूद भी है। स्पष्ट है कि "होना चाहिए" और "है" में बड़ा अन्तर है।

अर्थात् जो व्यक्ति केवल इतना ही ज्ञान रखता है कि केवल होना चाहिए की श्रेणी पर आकर ठहर गया है फिर इसके पीछे उसकी नज़र के सामने अंधकार ही अंधकार है वह अपने ज्ञान की दृष्टि से उस व्यक्ति के समान हरगिज़ नहीं कि जो उस वास्तविक रचयिता के संबंध में केवल यह नहीं कहता कि होना चाहिए बल्कि उस प्रकाश की गवाही से जो उसको दिया गया है महसूस भी कर लेता है कि वह "है" भी और यह नहीं कि वह केवल आकाशीय प्रकाश से ख़ुदा की हस्ती को देखता है बल्कि उस आकाशीय प्रकाश के मार्ग-दर्शन से उसकी बौद्धिक एवं मानसिक शक्तियां भी ऐसी तेज़ की जाती हैं कि उसका अनुमानित तर्क भी उच्च से उच्च होता है। तो वह दोहरी शक्ति से ख़ुदा तआला के अस्तित्त्व पर विश्वास रखता है। यहां आकाशीय प्रकाश से अभिप्राय यह है कि उसे ख़ुदा तआला का निश्चित वार्तालाप प्राप्त होता है या वार्तालाप करने वाले से उसका अत्यन्त गहरा और घनिष्ठ संबंध होता है। और ख़ुदा के वार्तालाप से यह अभिप्राय नहीं है कि सामान्य लोगों की भांति काल्पनिक तौर पर वह इल्हाम का दावा करता है, क्योंकि काल्पनिक इल्हाम कुछ चीज़ नहीं है बल्कि वह बुद्धि से भी नीचे गिरा हुआ है। अपितु इस से अभिप्राय यह है कि वास्तव में वह निश्चित एवं ठोस तौर पर ख़ुदा तआला की ऐसी पवित्र और पूर्ण वह्यी होती है जिस के साथ आकाशीय निशान एक अनिवार्य बात की तरह होते हैं। वह वह्यी स्वयं में अत्यन्त वैभव और श्रेष्ठता रखती है तथा अपने रोब से भरपूर और आनन्दमय शब्दों के साथ एक फ़ौलाद की कील की भांति दिल के अन्दर धंस जाती है और

उस पर ख़ुदा के निशानों तथा विलक्षण लक्षणों की एक चमकती हुई मुहर होती है और मनुष्य को ख़ुदा पर पूर्ण विश्वास प्राप्त करने के लिए यह एक पहली आवश्यकता है कि ऐसी वह्यी से स्वयं लाभान्वित हो या एक लाभान्वित से घनिष्ठ संबंध रखता हो जो रूहानी प्रभाव से दिलों को अपनी ओर खींचने वाला हो। तो प्रत्येक धर्म जो यह ताज़ा से ताज़ा वह्यी जो अपने साथ जीवित निशान रखती हैं प्रस्तुत नहीं कर सकता। वह उन सड़ी हुई हडिड्यों के समान है जिन्हें मिट्टी ने उनको लगभग मिट्टी के समान कर दिया है। ऐसे धर्म से हरगिज़ संभव नहीं कि कोई सच्चा परिवर्तन पैदा कर सके। और उस पर गर्व करने वाले केवल वही लोग हो सकते हैं जो केवल बाप-दादों की लकीर पर चलना चाहते हैं और सच की तलाश की उन की रूह में कोई अभिलाषा नहीं और न ऐसी अभिलाषा के वे इच्छुक हैं बल्कि घोर पक्षपात और गुमराही के प्रेम से उसकी आन्तरिक स्थिति की एक काया-पलट हो रही है। उनको इस बात की परवाह नहीं कि वे निश्चित तौर पर ख़ुदा पर कैसे ईमान ला सकते हैं और वह ख़ुदा किन विशेषताओं का होना चाहिए जिस पर निश्चित तौर पर ईमान पैदा हो सकता है और वे कौन सी बातें हैं जो ख़ुदा तआला की हस्ती के संबंध में विश्वास को पैदा कर सकती हैं और विश्वास के लक्षण क्या हैं जो विश्वास करने वाले के लिए बतौर विशेष निशान के होते हैं। याद रहे कि यद्यपि कोई धर्म किसी सीमा तक औचित्य के रूप में हो और प्रत्यक्ष सभ्यता एवं शालीनता से भी विभूषित हो परन्तु केवल इसी सीमा तक नहीं कहा जाएगा कि वह धर्म ख़ुदा तआला की हस्ती और

उसकी विशेषताओं के संबंध में विश्वास की श्रेणी तक पहुंचाता है बल्कि संसार के समस्त धर्म उस समय तक सर्वथा निरर्थक, व्यर्थ, बेकार निष्प्राण और मुर्दा हैं जब तक कि एक साधक को विश्वास के शुद्ध झरने तक न पहुंचा दें।

अफ़सोस कि अधिकतर लोग नहीं समझते कि ख़ुदा के अस्तित्त्व, उसकी हस्ती, उसकी श्रेष्ठता, उसकी क़ुदरत और अन्य उत्तम विशेषताओं पर विश्वास लाना क्या चीज़ है बल्कि यदि उनकी हालत पर अफ़सोस से यह राय प्रकट की जाए कि वह शुद्ध झरनें विश्वास से वंचित हैं इसलिए वे सच्ची पवित्रता से भी वंचित हैं जो विश्वास के बाद प्राप्त होती हैं तो वे इस बात से बहुत क्रोधित होते हैं और जोश में आकर कहते हैं कि क्या हम ख़ुदा पर विश्वास नहीं रखते, क्या हम उसको नहीं मानते। अतः इन बातों का यही उत्तर है कि वास्तव में तुम ख़ुदा पर विश्वास रखते हो और न उसको मानते हो। अफ़सोस कि वे नहीं समझते कि हर एक सूराख पर जो उनको हार्दिक विश्वास होता है कि उसमें एक ज़हरीला सांप है वे उसमें अपना हाथ नहीं डालते, क्योंकि उसमें अपनी मौत देखते हैं। परन्तु वे हर एक गुनाह बड़ी निर्भीकतापूर्वक कर लेते हैं। वे एक घातक विष को नहीं खाते क्योंकि जानते हैं कि मर जांएगे। परन्तु बड़े-बड़े भयंकर अपराध उन से प्रकटन में आते हैं बल्कि विश्वास तो विश्वास कल्पना की श्रेणी पर भी वे किसी ऐसे कार्य को नहीं करते जिस से किसी हानि की संभावना है। उदाहरणतया वे किसी ऐसी छत के नीचे सोना पसन्द नहीं करने जिस का शहतीर किसी सीमा तक टूट गया है। वे किसी ऐसे गांव में रहना नहीं चाहते जिसमें हैज़ा या ताऊन आरंभ हो

गयी है। फिर क्या कारण है कि विश्वास के दावे के बावजूद ख़ुदा तआला के आदेशों को तोड़ते हैं, तो निस्सन्देह समझो कि वास्तविक बात यही है कि वास्तव में उनको विश्वास नहीं बल्कि उनको यह भारी गुमान भी नहीं कि एक शक्तिशाली अस्तित्त्व मौजूद है जो एक पल में मार सकता है।

ईसाइयों का ख़ुदा

आजकल यह रोग किसी विशेष समुदाय से विशिष्ट नहीं बल्कि जैसे ईसाइयों में है ऐसा ही मुसलमानों में भी पाया जाता है और अपनी श्रेणी के अनुसार पूर्वी लोगों ने भी उस से हिस्सा लिया है जैसा कि पश्चिमी लोगों में, मुसलमानों और ईसाइयों में यह अन्तर है कि मुसलमान तो लापरवाही से सच्चे और शक्तिशाली ख़ुदा से लापरवाह हैं फिर भी ख़ुदा तआला हमेशा उन पर अपना प्रकाश प्रकट करता रहता है और हर युग में उनको अपनी ओर खींचता है और बहुत से सौभाग्यशाली लोग उस प्रकाश से हिस्सा लेते हैं। परन्तु ईसाई तो बहुत समय हुआ कि उस ख़ुदा को खो बैठे हैं जिस पर ईमान पैदा होने से पवित्र परिवर्तन पैदा होता है और उसकी श्रेष्ठता एवं प्रताप की कल्पना से वास्तव में गुनाह से सच्ची विमुखता पैदा हो जाती है तथा ये लोग उस हमेशा जीवित एवं क़ायम रहने वाले ख़ुदा की बजाए एक असहाय मनुष्य को जो मरयम का बेटा और यसू कहलाता है ख़ुदा ठहराते हैं हांलाकि न वह दुआओं का उत्तर दे सकता है और न स्वयं किसी को पुकार सकता है और न कोई अपनी श्रेष्ठता और क़ुदरत प्रकट कर सकता है। तो उसके द्वारा यदि सच्ची पवित्रता प्राप्त

हो तो क्योंकर हो। उसकी क़ुदरत के जो नमूने किताबों में लिखे हैं वही हैं जो उसने यहूदियों के हाथ से भिन्न-भिन्न प्रकार के कष्ट उठाए, सम्पूर्ण रात की दुआ स्वीकार न हुई, मां पर लज्जाजनक इल्ज़ाम क़ायम हुआ उसकी प्रतिरक्षा किसी ख़ुदाई चमकार से न कर सका, उसके चमत्कारों में यदि वे सही भी मान लिए जाएं कोई ऐसी खूबी नहीं जो दूसरे नबियों के चमत्कारों में न हो, बल्कि एलिया नबी के चमत्कार और उसका मुर्दे जीवित करना यह क़ुदरत का कमाल मसीह के चमत्कारों से बहुत बढ़कर है। इसी प्रकार यसइयाह नबी के वास्तव में कुछ चमत्कार ऐसे हैं कि मसीह के चमत्कारों की उनसे कुछ तुलना नहीं तथा हज़रत मसीह की भविष्यवाणियां तो बहुत ही रद्दी हालत में है कि उन से कोई अच्छा प्रभाव पड़ने की बजाए उनको पढ़ कर हंसी आती है कि ये किस प्रकार की भविष्यवाणियां हैं कि अकाल पड़ेंगे, भूकम्प आंएगे, लड़ाइयां होंगी। हालांकि इन भविष्यवाणियों से पहले भी देश में सब कुछ हो रहा था। तो ऐसे ख़ुदा पर क्योंकर कोई ईमान लाए।

ये तो पहले क़िस्से हैं। ख़ुदा जाने इन घटनाओं में सच कितना है और झूठ कितना? परन्तु इस युग के लोगों के लिए इस नए ख़ुदा के मानने में जिस का यहूदियों की शिक्षा में भी नामोनिशान नहीं और भी कठिनाइयां बढ़ गई हैं क्योंकि इन लोगों ने न तो चश्मदीद तौर पर स्वयं मुर्दे जीवित होते देखे और न रोगियों में से भूतों का निकलना स्वयं अपनी आंखों से देखा और न वे वादे पूरे हुए जो उनके बारे में किए गए थे। अर्थात् यह कि यदि वे कोई विष खा लें तो असर नहीं करेगा और यदि एक पहाड़ को कहें कि एक स्थान

से उठ जाए तो वह तुरन्त उठ जाएगा और सांपों को अपने हाथ में पकड़ेंगे और वे नहीं काटेंगे, क्योंकि हम देखते हैं कि प्रायः यूरोप के ईसाई खुदकशी से मरते हैं, विष उनमें तुरन्त असर कर जाता है और पहाड़ का तो क्या वर्णन यदि एक उल्टा पड़ा हुआ जूता हो तो केवल आदेश से उसे सीधा नहीं कर सकते जब तक हाथ हिला कर सीधा न करें और सांप इत्यादि ज़हरीले जानवरों से हमेशा मरते रहते हैं। अब यदि इसके उत्तर में यह कहा जाए कि इन आयतों के वास्तविक अर्थ नहीं लेने चाहिए बल्कि यहां काल्पनिक अर्थ अभिप्राय हैं। जैसे विष से अभिप्राय यह है कि वे कोध को खा लेते हैं और सांपों से अभिप्राय यह कि दुष्ट उन को हानि नहीं पहुंचा सकते तो इस से पूर्व कि हम इन तावीलों (वास्तविक अर्थों से हट कर व्याख्या) में भी बात करें तो हम अधिकार रखते हैं कि उस समय यह प्रश्न प्रस्तुत कर दें कि जब यह समस्त दावे जो निशानों के लिए दिए गए और हज़रत मसीह ने बार-बार फ़रमाया कि मैं जो कुछ निशान दिखाता हूं मेरे अनुयायी वे भी निशान दिखांएगे केवल रूपक और कल्पना के रंग में हैं और उन से अभिप्राय निशान नहीं हैं, तो इससे निश्चित तौर पर सिद्ध होता है कि जो कुछ हज़रत मसीह की तरफ चमत्कार सम्बद्ध किए जाते हैं वे भी रूपक के रंग में हैं, क्योंकि हज़रत मसीह इंजीलों में बार-बार कह चुके हैं कि मैं जो कुछ चमत्कार दिखाता हूं वही चमत्कार मेरे सच्चे अनुयायी भी दिखाते रहेंगे। अब चूंकि ऐसे चमत्कारों की मांग के समय यह उत्तर मिलता है कि इन स्थानों से अभिप्राय चमत्कार नहीं हैं बल्कि केवल मसीही लोगों की नैतिक हालतें अभिप्राय हैं तो क्यों न कहा

जाए कि हज़रत मसीह के चमत्कारो से भी ऐसी ही बातें अभिप्राय हैं न कि वास्तव में चमत्कार। अत: ईसाइयों के लिए यह प्रश्न एक बड़े संकट का स्थान है जिस का कोई भी उत्तर उनके पास नहीं। अब यदि इस स्थान में कुछ अधिक विचार किया जाए, तो वास्तव में यह एक संकट नहीं बल्कि तीन संकट हैं -

1. एक तो यह कि मसीह का कहना कि मैं जो कुछ चमत्कार दिखाता हूं वही चमत्कार बल्कि उन से बढ़ कर मेरे अनुयायी भी दिखाएंगे। यह बात बिल्कुल झूठी निकली।

2. दूसरे इस झूठ ने यह भी सिद्ध कर दिया कि मसीह ने भी कोई चमत्कार नहीं दिखाया। क्योंकि यदि मसीह ने कोई चमत्कार दिखाया था तो आवश्यक था कि मसीह के अनुयायी (मानने वाले) भी चमत्कार दिखाने पर समर्थ होते।

3. तीसरे यदि कष्ट कल्पना के तौर पर हम स्वीकार भी कर लें कि मसीह से चमत्कार प्रकट हुए थे और उन इबारतों की कुछ परवाह न करें जहां इंजीलों में लिखा है कि इस युग के हरामकार निशान मांगते हैं उन को कोई निशान नहीं दिखलाया जाएगा तथापि ऐसे चमत्कारों से जो पहले नबियों के चमत्कारों से कुछ अधिक नहीं हैं बल्कि कम हैं मसीह की ख़ुदाई सिद्ध नहीं हो सकती।

तो जब कि मसीह की ख़ुदाई ऐसी है कि एक सद्‌बुद्धि रखने वाले आदमी को उस पर किसी प्रकार विश्वास नहीं आ सकता तो ऐसी ख़ुदाई गुनाह से क्योंकर रोक सकती है। हम पहले लिख चुके हैं कि वह बात जो प्रथम स्तर पर गुनाह से रोकती है वह ख़ुदा तआला के अस्तित्त्व पर विश्वास है। अर्थात् यह विश्वास कि

वास्तव में एक ख़ुदा है जो गुनाह का दण्ड देता है परन्तु मसीह के बारे में ऐसा विश्वास कैसे पैदा हो। भला कोई हमें यह तो बताए कि उसमें और उन लोगों में जो मर चुके हैं परस्पर अन्तर क्या है। हम और प्रत्येक बुद्धिमान ख़ूब जानते हैं कि ख़ुदा में और सृष्टि में परस्पर एक अन्तर अवश्य चाहिए, परन्तु यहां उस अन्तर की चर्चा क्या यहां तो इतना भी अन्तर सिद्ध नहीं जो एक मुर्दा व्यक्ति और जीवित व्यक्ति में हो सकता है। अफ़सोस कि ईसाई लोग तो मसीह की ख़ुदाई के लिए शोर और फरियाद कर रहे हैं परन्तु हम तो इतने पर ही प्रसन्न हो सकते हैं कि वे हज़रत मसीह को एक जीवित मनुष्य की श्रेणी पर सिद्ध करके दिखा दें। हमें किसी धर्म से वैर नहीं। यदि इब्ने मरयम ख़ुदा है तो हम सब से पहले उसे स्वीकार करने को तैयार हैं, यदि वास्तव में वही शफ़ीअ है तो हम चाहते हैं कि प्रथम मोमिन हम ही हों। परन्तु केवल ग़लत, सर्वथा व्यर्थ और झूठ को हम क्योंकर स्वीकार कर लें। यदि ख़ुदा ऐसा ही कमज़ोर और असहाय होना चाहिए जैसा कि यसू इब्ने मरयम है तो फिर ऐसे ख़ुदा के मानने की कुछ भी आवश्यकता नहीं और न किसी प्रकार उस पर विश्वास आ सकता है, परन्तु यदि यसू मसीह ऐसा ख़ुदा है कि हम उसी ढंग से उस को पहचान सकते हैं जिस प्रकार ख़ुदा तआला प्रत्येक युग में नबियों के माध्यम से तथा स्वयं भी स्वयं की पहचान कराता रहा है और वे भी इस से अपरिचित नहीं रहे जिन को आकाशीय किताबें नहीं पहुंची तो हम उसके स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। तो क्या पृथ्वी के ऊपर कोई ऐसे सज्जन हैं जो मसीह का कोई विशेष निशान हमें दिखाएं

अर्थात् हम उसकी आवाज़ सुन सकें और उसकी ख़ुदाई के निशानों को हम देख सकें। क्योंकि हम बार-बार लिख चुके हैं कि यदि उस सच्चे ख़ुदा पर भी केवल सन्देहात्मक ईमान हो जो वास्तव में ख़ुदा है तब भी ऐसा ईमान गुनाहों से मुक्ति देने वाला नहीं हो सकता, फिर ऐसा कृत्रिम ख़ुदा जो यहूदियों के हाथ से मारें खाता रहा दिल में यदि केवल सन्देह के तौर पर उस ख़ुदा की ख़ुदाई का विचार जमाया जाए तो ऐसा विचार किस रोग से मुक्ति देगा।

यह निश्चित बात है कि वह ख़ुदा जो वास्तव में ख़ुदा है उस पर ईमान लाना भी उसी हालत में गुनाह से छुड़ा सकता है जबकि वह ईमान विश्वास की श्रेणी पर पहुंच गया हो। तो फिर किसी मनुष्य को ख़ुदा बनाना और उसकी ख़ुदाई पर ठोस तर्क प्रस्तुत न करना कितना शर्म का स्थान है और वास्तव में ऐसे लोग ईमानदारी के शत्रु हैं। मैं नहीं समझ सकता कि इन लोगों को इस लज्जाजनक कार्रवाई के लिए कौन सी आवश्यकता पड़ी थी और अजर-अमर ख़ुदा को मानने में कौन सी हानियां महसूस हुई थीं, जिनका निवारण इस कृत्रिम ख़ुदा से किया गया। हम गवाही देते हैं कि वह सच्चा ख़ुदा जो आदम पर प्रकट हुआ और फिर शीस पर और फिर नूह पर, इब्राहीम पर और मूसा तथा समस्त नबियों पर यहां तक कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वह हमेशा जीवित और जीवित रखने वाला तथा क़ायम रहने वाला है और जैसा कि वह पहले युगों में नबियों के माध्यम से اَنَا الْمَوْجُود (मैं मौजूद हूं) कहता था अब भी उसी तरह कहता है और जैसा कि पहले नबियों ने उसकी वैभवशाली आवाज़ें सुनीं और उसके निशान देखे

थे और जैसा कि पहले युगों में वह अपने लोगों की दुआएं सुनता और उत्तर देता था ऐसा ही अब भी वह हमारी दुआएं सुनता तथा उत्तर देता है और जैसा कि पहले ईमानदार उस से प्रेम करने तथा उसका चेहरा देखने से सच्ची पवित्रता प्राप्त करते थे वैसा ही हम भी प्राप्त कर रहे हैं। तो इस शक्तिशाली और सत्तावान ख़ुदा को वही छोड़ेगा जो बड़ा दुर्भाग्यशाली तथा अन्धा होगा। हम विश्वास रखते हैं कि संसार में जितने झूठे तौर पर ख़ुदा बनाए गए हैं जैसा कि यसू इब्ने मरयम, राम चन्द्र जी और कृष्ण जी तथा बुद्ध इत्यादि ये केवल बिना तर्क बनाए गए हैं और इसका उदाहरण ऐसा ही है जैसे कि एक बकरी को इन्सान कहा जाए, हालांकि न वह बोलती है और न मनुष्यों की भांति चल सकती है और न मनुष्यों की तरह उस की सूरत है और न मनुष्यों की तरह वह बुद्धि रखती है और न इन्सानियत का उसमें कोई लक्षण पाया जाता है। तो क्या तुम एक बकरी को इन्सान कह सकते हो, हालांकि बहुत सी बातों में बकरी को इन्सान से भागीदारी भी है। उदाहरणतया बकरी खाती है जैसे कि इन्सान खाता है। बकरी मल-मूत्र करती है जैसे कि इन्सान करता है। परन्तु क्या कोई बता सकता है कि मसीह अलैहिस्सलाम या रामचन्द्र जी इत्यादि को ख़ुदा से कोई विशेष भागीदारी है जो सिद्ध हो सके।

इन ख़ुदाओं को बनाए जाने का इसके अतिरिक्त कोई कारण नहीं है कि एक कमी की तुलना में अधिकता का मार्ग अपनाया गया है। जैसे राजा रावण ने जब बहुत कठोरता पूर्वक राजा रामचन्द्र का अपमान किया और उनकी पत्नी को भगा ले जाने से रामचन्द्र जी

की सम्पूर्ण जमाअत को बड़ा भारी आघात पहुंचाया तो जो पक्ष राजा रामचन्द्र का सहायक था उन्होंने तुरन्त राजा रावण को इन्सानों की नस्ल से बाहर किया और राजा रामचन्द्र को ऐसे पूर्ण विश्वास से परमेश्वर बना दिया कि अब तक समस्त हिन्दू अपने परमेश्वर का नाम लेने की बजाए राम-राम ही किया करते हैं बल्कि उनके सलाम का शब्द भी राम-राम ही है। इस से मालूम होता है कि ईसाइयों का यसू को ख़ुदा बनाने में अभी इतनी अतिशयोक्ति नहीं जैसी कि हिन्दुओं को रामचन्द्र जी के ख़ुदा बनाने में अतिशयोक्ति है, यहां तक कि हिन्दुओं को अपने परमेश्वर का नाम लगभग भूल ही गया है तथा प्रत्येक अवसर पर राम-राम के प्रयोग की अधिकता है। तो मुकाबले पर स्वाभिमान एवं अतिशयोक्ति के कारण राजा रामचन्द्र को ख़ुदा बनाया गया है उन्हीं सामानों से यसू इब्ने मरयम को भी ख़ुदा बनाया गया। अर्थात् पहले दुष्ट यहूदियों ने हज़रत मसीह की पैदायश को अवैध ठहरा दिया और हज़रत मरयम पर सतीत्व हीनता का आरोप लगाया और फिर हज़रत मसीह के चरित्र पर बहुत झूठ बांधा। अतः कुछ यहूदी विद्वानों की पुस्तकें जो इस समय हमारे अध्ययन में हैं उनके पढ़ने से ज्ञात होता है कि उन्होंने हज़रत मसीह के जीवन का बहुत ही बुरा चित्रण किया है। उन यहूदी विद्वानों की ये पुस्तकें इन दिनों में शाम के समय हमारी मज्लिस में केवल इस उद्देश्य से पढ़ी जाती हैं ताकि हमारी जमाअत को इस बात का ज्ञान हो जाए कि आजकल कुछ नासमझ पादरी हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के व्यावहारिक जीवन पर झूठ और इल्ज़ाम के तौर पर प्रहार करते हैं उन से अधिक बुरे प्रहार हज़रत मसीह के जीवन

पर किए गए हैं यहां तक कि कुछ ऐसे प्रहार हैं जिन के लिखने से भी शर्म और लज्जा रोक है। उनकी मां पर अत्यन्त गन्दा आरोप है, ऐसा ही उनकी कुछ दादियों अर्थात् तमर, राहिब और बिन्ते सब्आ पर दुष्कर्म के आरोप हैं जिन को पादरी लोग भी स्वीकार करते हैं और सबसे निकृष्ट वे आरोप हैं जो हज़रत मसीह के चाल-चलन पर हैं। और यह कि उन्होंने किस प्रकार प्रत्येक बात में धोखे से काम लिया और क्योंकर ख़ुदा ने तौरात के वादे के अनुसार अन्ततः मृत्यु-दण्ड दे दिया। यह समस्त अपमान और अनादर तथा आरोप के ऐसे शब्द हैं जो एक मुसलमान इस के बिना कि जो सहसा क्रोध में आ जाए उनको पढ़ नहीं सकता। तो जब हज़रत मसीह का इतना अपमान किया गया कि जो एक साधारण मनुष्य की श्रेणी पर से भी उनको गिराया गया तो इस स्थिति में यह घटना एक स्वाभाविक बात थी कि जो जमाअत हज़रत मसीह पर ईमान लाई थी वह धीरे-धीरे अधिकता की ओर झुक जाती इसलिए जोश से भरपूर आदमी जिन को पहले से शिर्क से प्रेम था इसके बिना प्रसन्न न हो सके कि हज़रत मसीह को ख़ुदा बना दिया जाए जैसे कि वह इस प्रकार से यहूदियों के उन प्रहारों का बदला उतारना चाहते थे जो बड़ी सख़्ती से हज़रत मसीह पर किए गए थे।

तथा अद्भुत बात यह है कि जिन इंजीलों से ईसाई लोग हज़रत मसीह की ख़ुदाई सिद्ध करना चाहते हैं उन्हीं इंजीलों के हवाले से एक यहूदी विद्वान ने अपनी पुस्तक में यह सिद्ध करना चाहा है कि नऊज़ुबिल्लाह यह मनुष्य वास्तव में एक सांसारिक और मक्कार आदमी था, जिस से न कोई चमत्कार हुआ और न

कोई भविष्यवाणी सच्ची निकली और वह लिखता है कि इंजीलों में वर्णन किया जाता है कि जैसे मसीह ने बहुत से चमत्कार यहूदियों को दिखाए, यह कथन स्वयं इंजीलों के ही बयान से झूठ सिद्ध होता है। क्योंकि इंजील की गवाही से सिद्ध है कि जब क़ौम के बुज़ुर्ग यसू से कोई चमत्कार मांगते थे तो उसके उत्तर में यसू का यही तरीका था कि वह उन बुज़ुर्गों को गन्दी गालियां देकर यही कहा करता था कि इनको कोई चमत्कार नहीं दिखाया जाएगा। और फिर कहता है कि यदि हम मान भी लें कि उसने कुछ रोगियों को अच्छा किया था तो यह उस की ख़ुदाई के लिए कोई लाभप्रद तर्क नहीं। क्योंकि उसी युग में उसके विरोधी भी ऐसे चमत्कार दिखाते थे। फिर क्या बुद्धि स्वीकार कर सकती है कि ऐसे चमत्कार जिन से बहुत बढ़कर अन्य नबी दिखाते रहे हैं उन से यसू का ख़ुदा होना सिद्ध हो जाएगा। तो जब यहूदियों ने बड़ी सख़्ती से हज़रत मसीह का अपमान किया तो इसका एक आवश्यक परिणाम था कि इस कमी के मुकाबले पर अधिकता भी की जाती। अतः जब ईसाइयों में अधिकता की बाढ़ तीव्रता के साथ चली उसी युग में हज़रत मसीह के ख़ुदा बनाने के लिए बुनियाद रखी गई। यह बात उस समय भली भांति समझ आ सकती है जबकि एक ओर यहूदियों के प्रहारों को देखा जाए और दूसरी ओर इन प्रहारों से बचने के लिए ईसाइयों का बढ़ा-चढ़ा कर बातें करने को ध्यानपूर्वक सोचा जाए। अब चूंकि यहूदियों की पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं और कुछ यहूदी विद्वानों ने उनको फ्रांसीसी भाषा में प्रकाशित किया है और फिर वे अंग्रेज़ी भाषा में भी छप गई हैं। इसलिए इन दिनों में

सत्याभिलाषियों के लिए मूल वास्तविकता समझने के लिए अत्यन्त आसानी हो गई है। यहूदियों के सब फ़िर्के इस बात पर सहमत हैं कि जब से कि हज़रत मूसा को तौरात मिली फिर कभी-कभी नबी आते रहे किसी ने तस्लीस (तीन ख़ुदा होने) की शिक्षा नहीं दी बल्कि यही शिक्षा देते रहे कि तुम्हारा ख़ुदा एक है और ग़ायब है। यहूदियों का यह भी बहाना है कि जब मूसा ने तूर पर्वत पर ख़ुदा तआला से निवेदन किया कि अपना चेहरा दिखा तो ख़ुदा ने उस समय क्यों कहा कि मेरा चेहरा कोई देख नहीं सकता। चाहिए था कि ख़ुदा उस समय यसू की शक्ल दिखा देता कि मेरा चेहरा यह है। तो यहूदियों ने यह सिद्ध करना चाहा है कि ईसाई धर्म एक ऐसा धर्म है कि तौरात के पुराने अहदनामः को जिस पर समस्त नबियों की मुहरें हैं, फ़ाड़ना चाहता है और तौरात का बुनियादी पत्थर जो तौहीद (एकेश्वरवाद) है उसके मिटाने के लिए तत्पर है।

निष्कर्ष यह कि ईसाइयों ने ऐसे ख़ुदा को प्रस्तुत करके कि जिसकी शिक्षा ख़ुदा के बारे में हरगिज़ हरगिज़ तौरात की शिक्षा के अनुसार नहीं और न क़ुर्आन के अनुसार है, एक घृणित बिदअत को संसार में फैलाना चाहा है। उनको इस बात की कुछ भी परवाह नहीं कि ऐसी नवीन आस्था ने यदि तौरात तथा अन्य नबियों के ग्रन्थों का विरोध किया है तो चाहे वह बुद्धि के द्वारा ही सिद्ध किया जाता बल्कि उनको बुद्धि के मार्ग से भी विचित्र लापरवाही है। मानो उनके नज़दीक बौद्धिक तर्क का धर्म पर कोई शासन नहीं, बल्कि उनके नज़दीक बुद्धि को यह अधिकार प्राप्त नहीं कि तौहीद और तस्लीस के बारे में अपनी कोई गवाही दे सके। वे दूसरों की आलोचना और

मीन-मेख निकालने के बहुत अभ्यस्त हैं, किन्तु आश्चर्य कि अपनी आस्था के बारे में भूल कर भी एक ध्यानपूर्वक दृष्टि नहीं डालते। उन का असली काम यह होना चाहिए था कि हज़रत मसीह की ख़ुदाई को जिस को तौरात, क़ुर्आन और बुद्धि तीनों झुठलाते हैं पहले सिद्ध कर लेते और फिर कफ़्फ़ारः तथा मुक्ति इत्यादि स्वयं बनाई हुई बातों पर ज़ोर देते, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया और अपनी आस्था की असल बुनियाद की उपेक्षा करके व्यर्थ बातों में पड़ गए किन्तु इसके साथ मैं यह भी वर्णन करना चाहता हूं कि इस ग़लती की तह में एक सच्चाई भी छुपी है और यद्यपि व्यर्थ भ्रमों के हाशिए से उस सच्चाई का मुंह काला कर दिया गया है कि अब सुन्दरता की बजाए एक अत्यन्त बुरी और डरावनी शक्ल दिखाई देती है, तथापि फिर भी उस काले बादल के अन्दर एक वास्तविक सच्चाई का विद्युत प्रकाश है जो बहुत ही धीमे तौर पर उसकी घातक शिक्षा मसीह को ख़ुदा बनाने में भी महसूस हो रही है, और वह यह है कि तौरात से सिद्ध होता है कि ख़ुदा ने मनुष्य को अपनी शक्ल पर पैदा किया और उसके अन्दर अपना प्रकाश रखा तथा उसमें अपनी रूह फूंकी और यही ख़बर पवित्र क़ुर्आन से भी मिलती है। तो यह बात इन्सानी योग्यता और प्रकृति से कुछ बढ़कर नहीं है कि ख़ुदा अपने बन्दे के शुद्ध दिल में इस प्रकार से प्रतापी तौर से उतरे कि उसकी श्रेष्ठता का तम्बू उसके दिल में स्थापित हो जाए और बन्दे को ख़ुदा से एक ऐसा संबंध पैदा हो जाए जैसा कि उदाहरणतया जब लोहे को एक अत्यन्त तीव्र एवं भड़कती हुई आग में डाला जाए तो वह बाहर से आग की शक्ल

पर ही दिखाई दे जाता है। परन्तु फिर भी वास्तव में। वह लोहा है न आग अत: वास्तव में यही संबंध ख़ुदा के पूर्ण प्रेमियों को ख़ुदा से हो जाता है और वे अपने अन्दर महसूस करने लगते हैं कि ख़ुदा उनमें उतरा है। और कभी-कभी इस अविष्कारों के संसार में कुछ लोगों की ज़ुबान पर शरीअत के विरुद्ध भी जारी हो जाते हैं। अर्थात् वे लोग उस ख़ुदाई संबंध को ऐसे रंग से वर्णन करते हैं कि सामान्य आदमी इस धोखे में पड़ते हैं कि जैसे वह ख़ुदाई का दावा करता है। लगभग इस प्रकार के वाक्य ख़ुदा की सब किताबों में पाए जाते हैं।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन और कार्य

पवित्र क़ुर्आन में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन और कर्म को इसी आधार पर ख़ुदा का कथन और कर्म ठहराया गया है। उदाहरणतया कथन के बारे में यह आयत है –

مَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰي ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۝ (अन्नजम – 4,5)

अर्थात् इस नबी का कथन मनुष्य होने की इच्छाओं के झरने से नहीं निकलता बल्कि उस का कथन ख़ुदा का कथन है। अब देखो कि इस आयत के अनुसार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सब कथन ख़ुदा तआला के कथन सिद्ध होते हैं। फिर इस के मुकाबले पर एक अन्य आयत है जिस से सिद्ध होता है कि आप के कार्य भी ख़ुदा तआला के कार्य हैं जैसा कि फरमाया है –

وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ (अलअन्फ़ाल – 18)

अर्थात् जो कुछ तू ने चलाया यह तू ने नहीं बल्कि ख़ुदा ने चलाया। तो इस आयत से सिद्ध हुआ कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कार्य भी ख़ुदा के कार्य हैं। फिर जिस हालत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन भी ख़ुदा के कथन हुए और कार्य भी ख़ुदा के कार्य हुए। तो अब बताओ कि इसके अतिरिक्त क्या परिणाम निकला कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला के सर्वांगपूर्ण द्योतक हैं परन्तु इसके बावजूद बुद्धिमान मुसलमान आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ुदा तआला नहीं और ईसाइयों की तरह आंजनाब को ख़ुदा का कोई उक़्नूम✷ (ख़ुदा का एक भाग) नहीं ठहराते। हालांकि यहां व्यावहारिक तौर पर भी सबूत है और वह यह कि जैसा कि ख़ुदा तआला अपने अस्तित्त्व के लिए स्वाभिमान रखता है उसी प्रकार अल्लाह तआला आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए स्वाभिमान दिखाए है और जिन लोगों ने आंजनाब को कष्ट दिए थे और अकारण के ख़ून किए थे और आपको देश से निकाला था, ख़ुदा तआला ने आंजनाब को मृत्यु नहीं दी जब तक कि उन लोगों को अज़ाब का स्वाद न चखा लिया तथा जिन लोगों ने साथ दिया था उन को तख़्तों पर बिठा दिया। अब जब हम आंजनाब की इन हालतों की यसू मसीह की हालतों से तुलना करते हैं तो विवश होकर हमें इक़रार करना पड़ता है कि अल्लाह तआला ने व्यावहारिक तौर पर यसू मसीह के लिए अपना कोई समर्थन प्रकट न किया बल्कि इसके विपरीत यहूदियों का समर्थन करता रहा, यहां तक कि उन्होंने यसू को सलीब

✷**उक़्नूम :-** ईसाई धर्म की आस्थानुसार ख़ुदा के तीन भागों में से एक भाग। (अनुवादक)

पर चढ़ा दिया और बड़े अपमान किए। ख़ुसरो परवेज़ ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़त्ल के लिए जब इरादा किया तो एक ही रात में स्वयं क़त्ल किया गया। परन्तु जब यहूदियों की झूठी जासूसी से यसू मसीह की गिरफ़्तारी का वारंट जारी हुआ तो केवल एक-दो सिपाहियों ने तीन घंटे के अन्दर यसू मसीह को गिरफ़्तार करके हवालात में दाखिल कर दिया। अब कोई समझ सकता है कि ऐसे व्यक्ति के साथ कोई ख़ुदाई प्रताप भी था जो सम्पूर्ण रात की दुआओं के बावजूद गिरफ़्तार होने से बच न सका। और फिर जब हम देखते हैं कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़त्ल के इरादे पर जितने लोग आक्रमण करने की नीयत से आप के घर एकत्र हुए थे और घर का घेरा कर लिया था वे बहुत प्रयासों के बावजूद असफल रहे और इसके बिना कि आंजनाब यसू मसीह के समान सारी रात दुआएं करते ख़ुदा के फ़ज़्ल (कृपा) से बचाए गए और इस लोगों के समूह से दिन के समय में साफ निकल गए और कोई आप को देख न सका। परन्तु हज़रत मसीह की दर्द से भरी दुआ ईली ईली लिमा सबक़तानी जिस पर अब तक यहूदी हंसी-ठट्ठा करते हैं ऐसी अस्वीकार हुई कि ईसाइयों के इक़रार के अनुसार इस दुआ के बाद परिणाम यही निकला कि सलीब पर चढ़ाए गए। यह तो हज़रत मसीह के अस्तित्त्व के साथ ख़ुदा तआला के मामले थे। फिर हवारियों की हालतें भी ऐसी ही हैं। उनको वादा दिया गया था कि अभी तुम जीवित होगे कि मैं वापस आऊंगा। अब देखो यह भविष्यवाणी कैसी सफाई से झूठी निकली और दो हज़ार वर्ष होने लगे आने का नामो निशान नहीं। वे सब प्रतीक्षा करने वाले ऐसी हालतों

में मरे कि यहूदी हमेशा उन से ठट्ठा करते रहे कि तुम्हारा उस्ताद दोबारा कहां आया और वे हमेशा इस प्रश्न से शर्मिन्दा रहे तथा कोई उत्तर न दे सके। उनको बारह तख़्तों का वादा दिया गया था परन्तु स्वयं हज़रत मसीह के जीवन में एक हवारी मुर्तद हो गया और दूसरे ने भी मुर्तदों का सा कार्य किया। इस हिसाब से तख़्त केवल दस रह गए। हांलाकि भविष्यवाणी में बारह का वादा था और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस संसार में तख़्तों पर बैठने का अपने सहाबा को वादा दिया था जिसे हमारे विरोधी भी जानते हैं कि वह वादा सच्चा हो गया। अतः हज़रत मसीह की शिक्षा में उन शब्दों से जिन से उनको ख़ुदा बनाया जाता है कोई अद्भुत और विचित्र शब्द नहीं। इसलिए कि अन्य नबियों की शान में भी इस प्रकार के बहुत शब्द आए हैं। आदम को भी ख़ुदा का बेटा कहा गया है तथा इस्राईल को भी ख़ुदा का बेटा कहा गया है बल्कि एक स्थान पर लिखा है कि तुम सब ख़ुदा हो। परन्तु क्या ऐसे शब्दों से यह परिणाम निकाल लेना चाहिए कि जिन लोगों के पक्ष में ऐसे शब्द इस्तेमाल पाए हैं वे वास्तव में ख़ुदा हैं या ख़ुदा के बेटे हैं। हज़रत मसीह ने भी तो ऐसे शब्द प्रयोग किए हैं।

मसीह मौऊद का प्रादुर्भाव

अतः बड़े अफ़सोस से कहना पड़ता है कि हज़रत मसीह के मामले में अकारण एक तिनके का पहाड़ बनाया गया है। देखो मैं भी ख़ुदा से इल्हाम पाता हूं और बीस वर्ष से अधिक समय से ख़ुदा तआला मुझ से परस्पर बातें करता है। डेढ़ सौ के लगभग निशान

प्रकट हुए हैं। मैं ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूं कि इस प्रकार के मुर्दे जो ख़ुदा की सुन्नत के अनुसार जीवित होते रहे हैं वे मुझ से भी जीवित हुए। इसी प्रकार मैं क़सम खाकर कह सकता हूं मेरी दस हज़ार से अधिक दुआएं स्वीकार हुई हैं तथा जिस प्रकार के शब्द इंजीलों में यसू मसीह के बारे में हैं जिन से उन की ख़ुदाई निकाली जाती है उन से बहुत बढ़कर ख़ुदा तआला का कलाम मेरे बारे में है और ऐसे वाक्य मैं ने पुस्तकों के माध्यम से प्रकाशित भी कर दिए हैं। ख़ुदा ने मेरा नाम आदम रखा है। ख़ुदा ने मेरा नाम इब्राहीम रखा है। ख़ुदा ने मेरा नाम मसीह मौऊद रखा है और ख़बर दी है कि वह मौऊद जिस के इन्तिज़ार में समस्त नबी गुज़र गए हैं वह तू ही है! परन्तु इसके बावजूद मैं यह नहीं कहता कि मैं ख़ुदा हूं या ख़ुदा का बेटा हूं। हालांकि मेरे बारे में ख़ुदा के कलाम में ऐसे शब्द प्रचुरता के साथ मौजूद हैं जिन के द्वारा मसीह इब्ने मरयम की अपेक्षा मैं आसानी के साथ ख़ुदा कहला सकता हूं परन्तु मैं जानता हूं कि यह कुफ्र है। इसीलिए मैं समस्त संसार से अधिक हैरान हूं कि मसीह इब्ने मरयम में कौन सी कोई विशेष श्रेष्ठता थी जिसके कारण उसको ख़ुदा बनाया गया? क्या उसके कोई विशेष चमत्कार थे मगर मैं देखता हूँ कि उस से बढ़कर यहाँ चमत्कार प्रकट हो रहे हैं क्या उसकी भविष्यवाणियां उच्च प्रकार की थीं परन्तु मैं घटना के विरुद्ध कहूंगा। यदि यह इक़रार न करूं कि जो भविष्यवाणियां मुझे दी गई हैं वे मसीह इब्ने मरयम से बहुत बढ़ कर हैं। क्या मैं यह कह सकता हूं कि इंजीलों में **मसीह इब्ने मरयम** की शान में बड़े उच्च स्तर के शब्द हैं जिन से उनको ख़ुदा मानना पड़ता है,

परन्तु मैं उस ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूं जिसकी झूठी कसम खाना संसार और आख़िरत में लानत का कारण है कि वे शब्द जो ख़ुदा तआला की ओर से मेरी शान में आए हैं जिन के बारे में पुनः क़सम खा कर कहता हूं कि वे शुद्ध रूप से ख़ुदा के शब्द हैं न कि इंजीलों की तरह अक्षरांन्तरित, परिवर्तित, बदले हुए वे उन शब्दों की शान से कहीं बढ़कर हैं जो मसीह इब्ने मरयम के बारे में पादरी लोग इंजीलों में दिखाते हैं। परन्तु क्या मुझे वैध है कि मैं भी ख़ुदाई का दावा करूं या ख़ुदा का बेटा कहलाऊं। तो इसी प्रकार निश्चित समझो कि मसीह इब्ने मरयम भी ख़ुदा का बेटा नहीं, न ख़ुदा है। मैं **मसीह-ए-मुहम्मदी** सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हूं और वह **मसीह-ए-मूसवी** था। ख़ुदा की तक़्दीर ने यह मुक़द्दर किया था कि इस्राईली सिलसिले के अन्त में जिसकी शरीअत का प्रांरभ मूसा से है एक मसीह आए और उसकी तुलना में यह भी निश्चित किया था कि इस्राईली सिलसिले के अन्त में भी जिसकी शरीअत का प्रारंभ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है एक मसीह आए तो ऐसा ही हुआ। मूसा ख़ुदा का बन्दा इस्राईल के लिए शरीअत लाया। ख़ुदा को मालूम था कि मूसा के लगभग चौदहवीं सदी पर बनी इस्राईल शरीअत की वास्तविकताओं और रहस्यों को त्याग देंगे और उनकी नैतिक अवस्था बहुत ख़राब हो जाएगी। अतः इसी उद्देश्य से ख़ुदा ने हज़रत मूसा से चौदहवीं सदी पर मसीह इब्ने मरयम को पैदा किया, उस देश में जिसमें बनी इस्राईल की हुकूमत भी शेष नहीं रही थी। तो जब तौरात की किताब इस्तिस्ना के वादे के अनुसार संसार में मूसा का मसील आया अर्थात् हज़रत मुहम्मद

मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो ख़ुदा ने आप के बाद भी जब चौदहवीं सदी पहुंची तो पहले मसीह के समान एक मसीह पैदा किया और वह **मैं हूं**। और जिस प्रकार मूसा का मसील (समरूप) बहुत सी बातों में मूसा से बढ़कर है इसी प्रकार ही **मसील-ए-ईसा** भी बहुत सी बातों में ईसा से बढ़कर है और यह आंशिक श्रेष्ठता है जिसको ख़ुदा चाहता है देता है।

इस्मत क्योंकर सिद्ध हो सकती है

अब मैं देखता हूं कि जिस इस्मत और शफ़ाअत के मसअले को ईसाइयों की ओर से बार-बार प्रस्तुत किया जाता है वह सर्वथा धोखा है जो ईसाइयों को लगा हुआ है। यदि मासूम (निष्पाप) के ये अर्थ हैं कि कोई शत्रु किसी के व्यावहारिक जीवन के बारे में कोई मीन-मेख न करे तो आओ हम यहूदियों की पुस्तकें दिखाते हैं जिन्होंने हज़रत मसीह और उन की मां के चाल-चलन पर बहुत कटाक्ष किया है और यदि मासूम होने के ये अर्थ हैं कि कोई व्यक्ति अपने मुंह से यह कहे कि मैं नेक हूं तो आओ हम इंजील से आप लोगों को दिखाते हैं कि मसीह ने इक़रार किया है कि मैं नेक नहीं हूं। तो जब स्वयं मसीह इब्ने मरयम की इस्मत किसी प्रकार से सिद्ध नहीं हो सकती, बल्कि इंजीलों से उसकी कुछ हरकतें इस्मत के विरुद्ध सिद्ध होती हैं। जैसे कि शराब पीना इंजील के स्थायी आदेश सुअर का अवैध होना और ख़त्ना: इत्यादि का तोड़ना, अकारण दूसरे के मालों को हानि पहुंचाना, यहूदी मौलवियों और विद्वानों को गालियां देना, व्यभिचारी स्त्रियों को शरीर स्पर्श करने का अवसर देना, हराम का

तेल सर पर मालिश कराना, शिष्यों को ग़ैर लोगों के खेतों से गुच्छे तोड़ने से मना न करना। अब बताओ कि ये समस्त बातें गुनाह हैं या नहीं? यदि शराब पीना अच्छा काम था तो यूहन्ना ने शराब पीने से क्यों नफ़रत की? दानियाल ने कहा कि शराब पीने वालों पर आकाश के दरवाज़े बन्द रहते हैं। ख़त्मः जो हमेशा रहने वाला आदेश था उस से क्यों रोक दिया। हालांकि आजकल के अन्वेषण के अनुसार वह बहुत से रोगों के लिए लाभप्रद है, ऐसा ही सुअर हमेशा के लिए हराम (अवैध) था उसको खाने का क्यों फ़त्वा दिया और स्वयं कहा कि तौरात निरस्त नहीं हुई और फिर स्वयं ही उसे निरस्त किया। याद रखना चाहिए कि मसीह इब्ने मरयम की इस्मत (पाकदामनी) इंजील की दृष्टि से सिद्ध करना ऐसा ही कठिन है जैसा कि उस क्षय रोगी का स्वास्थ्य सिद्ध करना जिसका रोग ذبــول (दुर्बलता) और दस्तों की हालत तक पहुंच चुका है। क्या आवश्यक न था कि पहले हज़रत मसीह की इस्मत (पाकदामनी) सिद्ध कर लेते फिर दूसरों पर मीन मेख करते। **क़ुर्आन** में इस्तिग़फ़ार का शब्द देख कर तुरन्त यह दावा कर देना कि इस से गुनाहगार होना सिद्ध होता है और इंजील के इस शब्द को हज़्म कर जाना कि मैं नेक नहीं। क्या यह ईमानदारी है? फिर इन सब बातों के बाद हम यह भी देखते हैं कि वह आख़िरत (परलोक) का शफ़ी वह सिद्ध हो सकता है जिसने संसार में शफ़ाअत का कोई नमूना दिखाया हो। तो इस मापदण्ड को सामने रख कर जब हम मूसा पर नज़र डालते हैं तो वह भी शफ़ीअ साबित होता है क्योंकि कई बार उसने उतरता हुआ अज़ाब दुआ से टाल दिया। इसकी तौरात गवाह है। इसी प्रकार जब हम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दृष्टि डालते हैं तो आप का शफ़ी होना अत्यन्त स्पष्ट एवं व्यापक रूप से ज्ञात होता है, क्योंकि आप की शफ़ाअत का ही प्रभाव था कि आप ने ग़रीब सहाबा को तख़्त पर बिठा दिया और आप की शफ़ाअत का ही प्रभाव था कि वे लोग इसके बावजूद कि उन्होंने मूर्ति पूजा और शिर्क में पालन-पोषण पाया था ऐसे एक ख़ुदा को मानने वाले हो गए जिन का उदाहरण किसी युग में नहीं मिलता और फिर आप की शफ़ाअत का ही प्रभाव है कि अब तक आप का अनुकरण करने वाले ख़ुदा का सच्चा इल्हाम पाते हैं ख़ुदा उन से वार्तालाप करता है। परन्तु मसीह इब्ने मरयम में ये सबूत क्योंकर और कहां से मिल सकते हैं। हमारे **सय्यिद-व-मौला मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम** की शफ़ाअत पर इस से बढ़कर तथा शक्तिशाली और क्या गवाही क्या होगी कि **हम इस जनाब के माध्यम से जो कुछ ख़ुदा से पाते हैं हमारे शत्रु वह नहीं पा सकते।** यदि हमारे विरोधी इस परीक्षा की ओर आएं तो कुछ दिनों में फैसला हो सकता है परन्तु वे फैसले के इच्छुक नहीं हैं। वे उसी ख़ुदा को मानने के लिए हमें विवश करते हैं जो न बोल सकता है, न देख सकता है और न समय से पहले कुछ बता सकता है, परन्तु हमारा ख़ुदा इन सब बातों पर सामर्थ्यवान है। मुबारक वह जो ऐसे का अभिलाषी हो।

(रीव्यू आफ़ रिलीजंज़ जिल्द-1, अंक-5, मई 1902 ई.
पृष्ठ-175 से 209 से उद्धृत)